www.ghoonghatkibagawat.com ghoonghatkibagawat37@gmail.com ghoonghatkibagawat.com

UP/HIN/1999/1282

घूँघट की बगावत

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित हिन्दी (साप्ताहिक समाचार पत्र)

वर्ष : 23 | अंक : 07 | गोरखपुर | 13 अगस्त 2023 | पृष्ठ : 08 | मूल्यः 2/–

प्रधानमंत्री ने रखी संत रविदास मंदिर और स्मारक की आधारशिला

सागर। मध्य प्रदेश में सागर जिले के बड़तूमा में 100 करोड़ की लागत से 11 एकड़ भूमि में संत रविदास का भव्य और ऐतिहासिक मंदिर तथा विशाल स्मारक बनाया जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को बड़तूमा पहुंचकर संत रविदास मंदिर और स्मारक की आधारशिला रखी। इस मौके पर राज्यपाल मंगुभाई पटेल और मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान भी मौजूद रहे। प्रधानमंत्री ने वैदिक मंत्रों के बीच विधि–विधान से यहां संत रविदास भव्य मंदिर और स्मारक का भूमि–पूजन किया। इसके साथ ही प्रधानमंत्री की मौजूदगी में प्रदेश में पांच स्थानों से निकली समरसता यात्राओं का भी समापन हुआ। प्रधानमंत्री ने यहां संत रविदास मंदिर का माडल भी देखा। मुख्यमंत्री चौहान ने उन्हें मंदिर निर्माण के संबंध में जानकारी दी। इसके बाद प्रधानमंत्री ढाना में जनसभा को संबोधित करेंगे। प्रधानमंत्री को सुनने के लिए सभास्थल पर बड़ी संख्या में लोग पहुंचे हैं। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री चौहान ने विगत 8 फरवरी को संत रविदास जयंती के मौके पर यहां मंदिर और स्मारक निर्माण की घोषणा की थी। मुख्यमंत्री की घोषणा के बाद यहां भव्य निर्माण किया जा रहा है। संत रविदास का नागर शैली से पत्थरों का भव्य मंदिर का निर्माण लगभग 10 हजार वर्गफिट क्षेत्रफल में किया जाएगा। साथ ही संस्कृति एवं रचनात्मक विशेषता के साथ संत रविदास के दर्शन को प्रदर्शित करने वाली एक विशेष शैली के इंटरप्रिटेशन म्यूजियम का निर्माण किया जाएगा। म्यूजियम का कुल क्षेत्रफल 14 हजार वर्गफिट होगा, जिसके अंतर्गत चार गैलरी निर्मित की जाएंगी। प्रथम गैलरी में संत रविदास के महान जीवन को प्रदर्शित किया जाएगा। दूसरी गैलरी संत रविदास के भक्ति मार्ग तथा निर्गुण पंथ में योगदान पर आधारित होगी। तृतीय गैलरी संत रविदास के दर्शन का विभिन्न मतों पर प्रभाव तथा रविदासिया पथ पर केंद्रित रहेगी, जबकि चतुर्थ गैलरी में संत रविदास के काव्योचित, साहित्य एवं समकालीन विवरण का समावेश रहेगा। इसके अलावा लाइब्रेरी एवं संगत हाल में संत रविदास के भक्ति मार्ग एवं दार्शनिक विचारों के समस्त साहित्य का संकलन उपलब्ध होगा। सभी आधुनिक सुविधाओं से युक्त लायब्रेरी भी होगी। कुंड–मंदिर परिसर में संत रविदास मंदिर के समीप जलकुंड का प्रतीकात्मक रूप से निर्माण किया जाएगा। भक्त निवास का निर्माण लगभग 12 हजार वर्गफुट में किया जाएगा, जिसमें आने वाले श्रद्धालुओं के ठहरने के लिए सर्व सुविधायुक्त वातानुकूलित 15 कक्ष बनाए जाएंगे। साथ ही 50 लोगों के ठहरने के लिए डोरमेट्री निर्मित की जाएगी।

मंदिर परिसर में आने वाले तीर्थ यात्रियों के लिए 15 हजार वर्गफिट में सर्व सुविधायुक्त वृहद फूड कोर्ट का निर्माण किया जाएगा।

बीबीएमपी कार्यालय परिसर में लगी भीषण आग

- घटनास्थल पर आग पर काबू पाने में जुटी दमकल कर्मी

बेंगलुरू। कर्नाटक के बेंगलुरु में गत शुक्रवार को आगजनी की घटना प्रकाश में आई। यहां ब्रुहत बेंगलुरु महानगर पालिका कार्यालय के परिसर में आग की घटना ने तहलका मचाया है। आग की घटना के बाद मौके पर मौजूद लोगों में अफरा–तफरी का माहौल बन गया।

ज्ञानवर्धक सूत्र बताते हैं कि कर्नाटक के बेंगलुरु में बीबीएमपी कार्यालय के परिसर में आग लगने की घटना के बाद इस बारे में दमकल विभाग को सूचित किया गया। सूचना मिलते ही मौके पर दमकल की गाड़यिा पहुंची। बेंगलुरु में बीबीएमपी कार्यालय के परिसर में आग लगने का कारण क्या है, फिलहाल इस बारे में अभी कुछ पता नहीं चला है और न ही आग से हुए नुकसान के बारे में अभी कुछ सूचना आई है।

अग्निशमन और आपातकालीन सेवाओं ने कहा कि, उन्हें शाम 4.52 बजे एक कॉल मिली। और दो दमकल गाड़ियों को मौके पर भेजा गया है। तो वहीं, आग की घटना में कम से कम आठ ठठडच अधिकारी के घ ाायल होने की बात सामने आई है। हालांकि, आग की घटना के बारे में अधिक जानकारी की प्रतीक्षा है, फिलहाल घ टनास्थल पर दमकल की टीम आग बुझाने के प्रयास में जुटी हुई है।

'हर घर तिरंगा' रैली को दिखाई हरी झंडी

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शुक्रवार को दिल्ली के प्रगति मैदान से 'हर घर तिरंगा' बाइक रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान केंद्रीय मंत्री जी किशन रेड्डी, अनुराग ठाकुर और शोभा करंदलाजे भी मौजूद रहे। वहीं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को लोगों से 13 से 15 अगस्त के बीच 'हर घर तिरंगा' अभियान में भाग लेने की अपील की। पीएम मोदी ने कहा, तिरंगा आजादी और राष्ट्रीय एकता की भावना का प्रतीक है। उन्होंने ट्वीट किया, हर घर तिरंगा अभियान ने आजादी के अमृत महोत्सव में एक नई ऊर्जा भरी है। देशवासियों को इस साल इस अभियान को एक नई ऊंचाई पर ले जाना है। आइए, 13 से 15 अगस्त के बीच देश की आन–बान और शान के प्रतीक राष्ट्रीय ध्वज को फहराएं। आजादी का अमृत महोत्सव के तत्वावधान में 13 से 15 अगस्त तक पूरे देश में 'हर घर तिरंगा' मनाया जाएगा। इसमें लोगों को अपने–अपने घरों पर झंडे फहराने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। इस अभियान की व्यापक पहुंच सुनिश्चित करने और बड़ी संख्या में लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए आज से सांसदों और मंत्रियों के साथ एक 'तिरंगा' बाइक रैली आयोजित की जा रही है। यह बाइक रैली इंडिया गेट सर्किल पर पहुंचेगी। इसके बाद रैली इंडिया गेट परिसर से होते हुए मेजर ध्यानचंद स्टेडियम में समाप्त होगी। 'हर घर तिरंगा' बाइक रैली से पहले केंद्रीय मंत्री जी किशन रेड्डी ने कहा कि आने वाले 15 अगस्त को देश के नागरिक अपने घ ारों पर तिरंगा लगाएं। यह 'आजादी का अमृत महोत्सव' का समापन कार्यक्रम है। हर किसी को इसका हिस्सा बनना चाहिए।

वहीं, केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि प्रत्येक नागरिक को 15 अगस्त और 26 जनवरी को अपने घरों में तिरंगा लगाना चाहिए। यह नागरिकों का कर्तव्य है। इस साल 15 अगस्त इसलिए खास है। यह आजादी का अमृत महोत्सव के समापन का प्रतीक है। यह संदेश देने के लिए आज बाइक रैली आयोजित की गई है कि हर कोई तिरंगा फहराए।

त्वचा का रंग बदलने के लिए जिम्मेदार 135 नये मेलेनिन जीन का पता लगा

भारतीय मूल के एक शोधकर्ता ने एक नये अध्ययन में त्वचा के रंग (रंजकता) से जुड़े 135 नये जीन की पहचान की है, जिन्हें लक्षित करने पर सफेद दाग और रंजकता संबंधी रोगों के इलाज के लिए दवाएं तैयार करने में मदद मिल सकती है। मनुष्य की त्वचा, बाल और आंखों का रंग मेलेनिन नामक प्रकाश–अवशोषित वर्णक द्वारा निर्धारित होता है। शोधपत्र के लेखक विवेक बाजपेयी ने कहा, ''मेलेनिन को क्या नियंत्रित करता है, इस बात को समझकर हम हल्के रंग की त्वचा वाले लोगों को मेलेनोमा या त्वचा कैंसर से बचाने में मदद कर सकते हैं।'' उन्होंने यह भी कहा, ''नये मेलेनिन जीन को लक्षित करके हम सफेद दाग और त्वचा के रंग से जुड़े अन्य रोगों के लिए मेलेनिन में बदलाव लाने वाली दवाएं भी विकसित कर सकते हैं।'' शोधकर्ताओं को 169 कार्यात्मक रूप से विविध जीन मिले, जो मेलेनिन उत्पादन को प्रभावित करते हैं। इनमें से 135 जीन ऐसे थे, जिनकी पहली बार पहचान की गई।ओक्लाहोमा विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ सस्टेनेबल केमिकल, बायोलॉजिकल एंड मैटेरियल्स इंजीनियरिंग के सहायक प्रोफेसर बाजपेयी और स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के सहयोगियों का शोध हाल ही में 'साइंस' जर्नल में प्रकाशित किया गया। मेलेनिन का उत्पादन मेलानोसोम नाम की विशेष संरचनाओं में होता है, जो मेलेनिन–उत्पादक वर्णक कोशिकाओं के अंदर पाए जाते हैं, जिन्हें मेलानोसाइट कहा जाता है। हालांकि, लोगों में मेलानोसाइट की संख्या समान होती है, लेकिन उनमें मेलेनिन की मात्रा भिन्न होती है और इसी कारण त्वचा के रंग में भिन्नता देखने को मिलती है। बाजपेयी ने कहा, ''अलग–अलग मात्रा में मेलेनिन के उत्पादन का कारण समझने के लिए हमने सीआरआईएसपीआर–सीएएस 9 नामक तकनीक से अनुवंशिक रूप से कोशिकाएं तैयार कीं। इस तकनीक का उपयोग करके हमने व्यवस्थित रूप से लाखों मेलानोसाइट से 20 हजार से अधिक जीन हटा दिए और फिर मेलेनिन के उत्पादन पर इसका प्रभाव आंका।

भारत के बारे में झूठा विमर्श गढ़ने के हो रहे प्रयास, सतर्क रहें

भारत में विभिन्न क्षेत्रों में विकास से संबंधित हाल ही में जारी किये गए आंकड़ों को देखने के पश्चात ध्यान में आता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था अब पटरी पर तेजी से दौड़ने लगी है। परंतु, देश के मीडिया में भारत के आर्थिक क्षेत्र में लगातार बन रहे नित नए रिकार्ड का जिक्र कहीं भी नहीं है। इसके ठीक विपरीत देश में रोजगार के अवसर नहीं बढ़ रहे हैं, गरीब अति गरीब की श्रेणी में जा रहा है, मुद्रा स्फीति की दर अधिक हो रही है, भुखमरी बढ़ रही है, हिंसा बढ़ रही है, अल्पसंख्यकों पर अत्याचार हो रहे हैं, आदि विषयों पर विमर्श गढ़ने का भरपूर प्रयास किया जा रहा है।

भारत में झूठे विमर्श गढ़ने का इतिहास रहा है। अंग्रेजों के शासन काल में भी कई प्रकार के झूठे विमर्श गढ़ने के भरपूर प्रयास हुए थे जैसे पश्चिम से आया कोई भी विचार वैज्ञानिक एवं आधुनिक है, भारत सपेरों का देश है एवं इसमें अपढ़ गरीब वर्ग ही निवास करता है, सनातन भारतीय संस्कृति रूढ़िवादी एवं अवैज्ञानिक है, शहरीकरण विकास का बड़ा माध्यम है अतः ग्रामीण विकास को दरकिनार करते हुए केवल शहरीकरण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, शहरी, ग्रामीण एवं जनजातीय के बीच में आर्थिक विकास की दृष्टि से शहरी अधिक महत्व के क्षेत्र हैं, विदेशी भाषा को जानने के चलते नागरिकों में आत्मविश्वास बढ़ता है, संस्कृति से अधिक तर्क को महत्व दिया जाना चाहिए, व्यक्ति एवं समश्टि में व्यक्ति को अधिक महत्व देना अर्थात व्यक्तिवाद को बढ़ावा देना चाहिए (पूंजीवाद की अवधारणा), कम श्रम करने वाला व्यक्ति अधिक होशियार माना गया, सनातन हिन्दू संस्कृति पर आधारित प्रत्येक चीज को हेय दृष्टि से देखना, जैसे दिवाली के पटाखे पर्यावरण का नुक्सान करते हैं, होली पर्व पर पानी की बर्बादी होती है। कुल मिलाकर पश्चिमी देशों द्वारा आज सनातन भारतीय संस्कृति पर आधारित हिन्दू परम्पराओं पर लगातार प्रहार किए जा रहे हैं। पश्चिमी देशों एवं कई विदेशी संस्थानों द्वारा भारत के विरुद्ध गढ़े जा रहे विमर्श के विपरीत भारत लगातार आर्थिक क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है। भारत के विकास में सेवा क्षेत्र का उत्पाद में 60 प्रतिशत से अधिक हिस्सा सेवा क्षेत्र का ही रहता है एवं रोजगार के नए अवसर उपलब्ध कराने में भी सेवा क्षेत्र का अहम स्थान है और इससे जुड़ी सर्विस पीएमआई के माह जुलाई 2023 के आंकड़े आ गए हैं। एसएंडपी ग्लोबल का इंडिया सर्विसेज पर्चेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स यानी पीएमआई का स्तर जुलाई में 62.3 पर रहा है जोकि पिछले 13 वर्षों का उच्च स्तर है और इसके जरिए भारत के सेवा क्षेत्र में हो रहे शानदार विकास का पता चलता है। सेवा क्षेत्र से निर्यात भी बहुत तेज गति से आगे बढ़ रहे हैं। सेवा निर्यात संवर्द्धन परिषद (एसईपीसी) ने यह उम्मीद जताई है कि वित्तीय वर्ष 2023–24 में भारत से सेवाओं का निर्यात 400 अरब डॉलर पर पहुंच सकता है। वाणिज्य मंत्रालय के शुरुआती आंकड़ों के अनुसार, वित्तीय वर्ष 2022–23 में भारत से सेवा क्षेत्र में निर्यात वित्तीय वर्ष 2021–22 के 254 अरब डॉलर से 42 प्रतिशत अधिक अर्थात 323 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। परिषद के चेयरमैन ने कहा है कि वित्तीय वर्ष 2022–23 के लिए सेवा क्षेत्र से 300 अरब डॉलर के निर्यात का लक्ष्य रखा गया था जबकि वास्तव में यह 323 अरब डॉलर का रहा है। कर संग्रहण के क्षेत्र में भी भारत में नित नए रिकॉर्ड बनाए जा रहे हैं। जुलाई 2023 माह में वस्तु एवं सेवा कर संग्रहण 11 प्रतिशत की वृद्धि दर अर्जित करते हुए 1.65 लाख करोड़ रुपए का रहा है, जो जुलाई 2022 माह में 1.49 लाख करोड़ रुपए का एवं जून 2023 माह में 1.61 लाख करोड़ रुपए का रहा था। वित्तीय वर्ष 2023–24 के लिए केंद्र सरकार ने वस्तु एवं सेवा कर संग्रहण के लिए 9.56 लाख करोड़ रुपए का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसी प्रकार, वित्तीय वर्ष 2022–23 से सम्बंधित आय कर रिटर्न दाखिल करने वाले नागरिकों की संख्या 31 जुलाई 2023 तक 6.77 करोड़ हो गई है, जो वित्तीय वर्ष 2021–22 से सम्बंधित फाइल किए गए 5.83 करोड़ रिटर्न की तुलना में 16.1 प्रतिशत अधिक है। हर्ष का विषय यह है कि इस वर्ष 53.67 लाख नागरिकों ने पहली बार आय कर रिटर्न दाखिल किया जागरूकता बढ़ रही है एवं गरीब वर्ग अब मध्यम वर्ग की श्रेणी में आ रहा है। भारत में माह जुलाई 2023 में ऊर्जा का उपभोग 8.4 प्रतिशत बढ़कर 13,900 करोड़ यूनिट्स के स्तर को पार कर गया है, जो अपने आप में एक रिकार्ड है।

भारत में आर्थिक गतिविधियां तेजी से आगे बढ़ रही है यह इस बात से भी सिद्ध होता है कि भारत में बैंकों द्वारा प्रदत्त किए जा रहे ऋणों में जबरदस्त उछाल दृष्टिगोचर है। जून 2023 माह में बैंकों के गैर खाद्यान्न ऋणों में 16.3 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है, जबकि मई 2023 माह में 15.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई थी।

कृषि क्षेत्र में 20 प्रतिशत, सेवा क्षेत्र में 27 प्रतिशत एवं उद्योग क्षेत्र में 8.1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है। साथ ही, जून 2023 माह में भारत के 8 मूलभूत क्षेत्रों द्वारा 8.2 प्रतिशत की वृद्धि अर्जित की गई है। स्टील उद्योग ने तो 21.9 प्रतिशत की वृद्धि दर अर्जित की है, वहीं कोयला एवं सिमेंट क्षेत्र में भी वृद्धि दर का आंकड़ा दहाई से भी अधिक का रहा है। 8 में से 7 क्षेत्रों में वृद्धि दर अच्छी रही है। भारत इस्पात उत्पादन के क्षेत्र में जापान को पीछे छोड़ते हुए आज वैश्विक स्तर पर दूसरा सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक देश बन गया है। भारत द्वारा इस्पात के क्षेत्र में आयात को कम करके 34,800 करोड़ रुपये बचाए गए हैं क्योंकि भारत में लगभग 6 करोड़ टन कच्चे इस्पात की क्षमता को जोड़ा गया है। भारत की इस्पात उत्पादन क्षमता वर्ष 2014–15 में 109.85 मीट्रिक टन थी जो वर्ष 2022–23 में बढ़कर 160.30 मीट्रिक टन हो गई है। इस प्रकार, अब इस्पात का कुल उत्पादन 88.98 मीट्रिक टन से बढ़कर 126.66 मीट्रिक टन हो गया है। भारत द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में लगातार प्राप्त की जा रही विभिन्न उपलब्धियों को दरकिनार करते हुए, भारत के बारे में भ्रांतियां फैलाई जाती रही हैं। जैसे, भारतीय कुछ नया करें तो उसे 'जुगाड़' कहा जाता है और चीन यदि कुछ नया करे तो 'रिवर्स इंजिनीयरिंग। पश्चिम का प्रत्येक सिद्ध करने की आवश्यकता होती है। पश्चिम का अधूरा अध्ययन भी साइन्स की श्रेणी में है, परंतु भारत के कई प्राचीन वैज्ञानिक तथ्य भी रूढ़िवादी माने जाते हैं। पश्चिमी विचारधारा में व्यक्ति की भावुकता के लिए कोई स्थान नहीं है, केवल तकनीकी के बारे में ही विचार किया जाता है। इसी प्रकार से भारत में बाल श्रम को लेकर पश्चिमी देशों द्वारा हो हल्ला मचाया जाता है किंतु उनके अपने देशों में कई प्रतियोगिताओं में 16 वर्ष से कम उम्र के बच्चे भी भाग लेते हैं, परंतु उनकी दृष्टि में यह बाल श्रम की श्रेणी में नहीं आता है। भारत में यदि 16 वर्ष की कम उम्र के बच्चे अपने पारम्परिक व्यवसाय की कला में पारंगत होना प्रारम्भ करें तो यह बाल श्रम की श्रेणी में माना जाता है। भारत के संदर्भ में यह दोहरी नीति का विमर्श क्यों खड़ा किया जाता है? पश्चिमी देशों द्वारा भारत के विरुद्ध चलाए जा रहे इस अभियान (झूठे विमर्श) को आज तोड़ने की आवश्यकता है। इसके लिए उनके प्रत्येक विमर्श को अलग अलग रखकर भिन्न भिन्न तरीकों से तोड़ना होगा। जैसे किसी विज्ञापन में भारतीय परम्पराओं का निर्वहन करने वाली महिला यदि बिंदी नहीं लगाएगी तो उस उत्पाद को नहीं खरीदेंगे, यदि किसी फिल्म में भारतीय संस्कृति एवं आध्यातम का मजाक उड़ाया जाता है तो उस फिल्म का भारतीय समाज बहिष्कार करेगा। भारतीय त्योहारों के विरुद्ध किये जा रहे प्रचार, जैसे दिवाली पर पटाखे जलाने से पर्यावरण को नुक्सान होता है, होली पर पानी की बर्बादी होती है, शिवरात्रि पर दूध बहाया जाता है, आदि के विरुद्ध भी उचित प्रतिकार किया जाना चाहिए। यह हमें समझना होगा कि भारतीय परम्पराएं आदि–अनादि काल से चली आ रही हैं और यह संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम के सिद्धांत पर विश्वास करती है। अतः पूरे विश्व में यदि शांति स्थापित करना है तो भारतीय संस्कृति पर आधारित दर्शन ही इसमें मददगार हो सकता है, इससे पूरे विश्व की भलाई होगी।

साभार, प्रह्लाद सबनानी

मुख्यमंत्री योगी ने 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान का किया शुभारंभ, काकोरी के शहीदों को किया नमन

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लखनऊ के काकोरी में मेरी माटी मेरा संकल्प अभियान का शुभारंभ कर लोगों से इस अभियान से जुड़ने की अपील की है। आप जिस क्षेत्र में है उसमें बेहतर करें, अपने कर्तव्यों का सही से निर्वहन करें। यही नागरिक कर्तव्य है यही सच्ची राष्ट्र भक्ति है। विभाजन की त्रासदी का स्मरण करें और संकल्प ले कि हम फिर से विभाजन नहीं होने देंगे। यही शहीदों के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी। जिस ब्रिटेन ने हम पर 200 वर्षों तक राज किया उसको हराकर आज भारत विश्व में पांचवीं अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित हुआ है। ये बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने काकोरी ट्रेन एक्शन की वर्षगांठ पर कही। मु ख्यमंत्री योगी ने इस अवसर पर मेरी माटी मेरा देश अभियान की शुरुआत की। उन्होंने कार्यक्रम में आये सभी लोगों से अभियान से जुड़ने का आह्वान किया और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा बताए गए पंच प्रण को लेकर अपने जीवन में उतारने का संकल्प लेने को कहा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने काकोरी ट्रेन एक्शन की वर्षगांठ पर काकोरी शहीद स्मारक पहुंच कर शहीद मंदिर में स्थापित शहीदों की प्रतिमाओं पर माल्यर्पण कर उन्हें नमन किया। इस अवसर पर उन्होंने मेरी माटी मेरा देश अभियान का शुभारंभ किया। उन्होंने आह्वान किया कि कार्यक्रम से जुड़े लोग अपनी जगह पर खड़े होकर अपनी माटी को नमन करें , सेल्फी लें और उसे अपलोड करें। उन्होंने इस अवसर पर प्रध. ानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा बताए गए पंच प्रण की शपथ कार्यक्रम में आये लोगों को दिलाई । उन्होंने कहा कि आज ही भारत छोड़ो आंदोलन की भी वर्षगांठ है साथ ही अन्य ऐतिहासिक घटनाओं के लिए आज के दिन का स्मरण किया जाता है। प्रधानमंत्री के आह्वान पर आजादी के अमृत महोत्सव से जुड़कर मेरी माटी मेरा देश अभियान की शुरुआत हो रही है। सीमा पर व आंतरिक सुरक्षा को मजबूत करने वाले शहीदों का नमन है। आजादी के महोत्सव ने एक ऐसे भारत का दर्शन कराया है जहां किसी के साथ भेदभाव नहीं है। आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर प्रत्येक भारतीय के पास अवलोकन करने का अवसर है। आगामी 25 वर्षो के अमृत काल से जुड़ने का भी अवसर है। जिस स्थल पर शहीदों ने काकोरी ट्रेन एक्शन को अंजाम दिया उसी स्थल से मेरी माटी मेरा देश अभियान को शुरू करने का अवसर मिल रहा है।

'काकोरी ट्रेन एक्शन में शहीदों ने करीब चार हजार रुपये लूटे थे'

मुख्यमंत्री योगी ने अपने संबोधन में कहा कि काकोरी ट्रेन एक्शन में शहीदों ने करीब चार हजार रुपये लूटे थे। उन शहीदों की गिरफ्तारी के लिए ब्रिटिश सरकार ने 10 लाख रुपये खर्च किये थे। अगर लड़ने का जज्बा हो तो बड़ी से बड़ी ताकत को हिलाया जा सकता है। आज भारत शक्तिशाली देशों के समूह जी –20 की अध्यक्षता कर रहा है। आज भारत आत्मनिर्भर है। विश्व को मानवता का पाठ पढ़ाने वाला भारत है। आगामी 13 अगस्त से 15 अगस्त तक अनेक कार्यक्रम होंगे। हर घर तिरंगा अभियान से जुड़ना है। जिस तिरंगे के लिए अनगिनत क्रांतिकारी बलिदान हुए उसी तिरंगे को हर घ ार फहराना है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आदिवासी जनजातियों को सम्मान देने के लिये बिरसा मुंडा की जयंती को आदिवासी जनजातीय दिवस घोषित किया साथ ही बिरसा मुंडा के संकल्प को आगे बढ़ाने का आह्वान किया।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर शहीद स्मारक पर काकोरी अमृत वाटिका की भी स्थापना की। इस वाटिका में 75 पौधों का रोपण हुआ। इस अवसर पर उन्होंने ने शहीद परिवार से जुड़े परिजन शरद रौशन सिंह , आफाक उल्ला खां, राजेन्द्र नाथ सान्याल ,उदय खत्री, कमला देवी और बीना जंग को सम्मानित किया। कार्यक्रम को मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्रा, मंत्री जय वीर सिंह ने भी लोगो को संबोधित किया।

झमाझम बारिश के साथ मौसम में आई नरमी

सुगंधों के सम्पर्क में आने पर बढ़ती है मस्तिष्क की कार्यक्षमता

नींद के दौरान कुछ सुगंधों के संपर्क में आने से मस्तिष्क की कार्यक्षमता में नाटकीय रूप से बढ़त होती है। यह दावा अमेरिका की कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी ने रिसर्च के आधार पर किया है। शोधकर्ताओं ने इसके पुख्ता सबूत पेश किए हैं कि सुगंधित हवा सोचने, समझने और याददाश्त से जुड़े मस्तिष्क के न्यूरोलॉजिकल क्षेत्रों को प्रभावित करती है। इससे बौद्धिक क्षमता बढ़ती है। शोधकर्ताओं ने यह रिसर्च 60 से 85 साल के 43 महिला और पुरुषों पर किया। रिसर्च में पता चला कि हर रात सोने से पहले कमरे में तरह–तरह के इत्र को छिड़कने से सोचने, समझने की कमजोरी और डिमेंशिया जैसी बीमारियों की गति को धीमा किया जा सकता है। बढ़ती उम्र के साथ बौद्धिक क्षमता को स्वस्थ रखने के लिए मस्तिष्क के ग्रे मैटर को सक्रिय रखना महत्वपूर्ण है। इसका मतलब रोज सिर्फ क्रॉसवर्ड हल करना नहीं है। बल्कि, दिमाग को उलझाने के लिए अपने आसपास हर तरह के दृश्यों और ध्वनियों से भरना भी है। यह मानना कोई बड़ी बात नहीं कि तरह–तरह की सुगंधों को अनुभव करने से मनुष्य को लाभ हो सकता है। सोचने–समझने की क्षमता से सूंघने की क्षमता भी कम होती है शारीरिक तौर पर हमारी सोचने, समझने और याद करने की क्षमता कम होने से पहले हमारी सूंघने की क्षमता कम हो जाती है। सूंघने की क्षमता को खोना मस्तिष्क कोशिकाओं की हानि से भी जुड़ा है। गंध से जुड़ी इंद्रियों का दिमाग के मेमोरी सर्किट से सीधे जुड़े होने का विशेष महत्व है। हमारी नजर कम हो जाए तो हम चश्मा लगा लेते हैं। सुनना कम हो जाए तो सुनने की मशीन लगा लेते हैं। लेकिन, सूंघ न पाने पर हम कुछ भी नहीं करते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपकी उम्र कितनी है या मानसिक स्थिति कैसी है। रात में जब रोशनी बंद हो जाती है। सन्नाटा छा जाता है। ऐसे में अपनी नाक को कुछ करने देना दिमाग को व्यायाम करवाने का बहुत अच्छा तरीका है। रिसर्च में एक समूह को गुलाब, रोजमेरी जैसी सुगंधों वाले प्राकृतिक तेल दिए गए। वहीं, दूसरे समूह को यही तेल नकली व कम सुगंध में दिया गया। दोनों समूहों को छह महीने तक हर रात सोने से दो घंटे पहले इन्हें अपने कमरे में छिड़कना था। छह महीने बाद जब दिमाग की सक्रियता का परीक्षण किया गया, तो पहले समूह के लोगों में सामने आया। इसके अलावा इस समूह के लोगों की सोचने की क्षमता और याददाश्त में भी बदलाव देखा गया।

हथकरघा उत्पाद बड़ी संख्या में ग्रामीण आबादी को रोजगार मुहैया कराते हैं

देशभर में आज राष्ट्रीय हथकरघा दिवस मनाया जा रहा है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य हथकरघा उद्योग के महत्व एवं आमतौर पर देश के सामाजिक आर्थिक विकास में इसके योगदान के बारे में जागरूकता फैलाना है। 2015 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चेन्नई में पहले राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के अवसर पर 'भारतीय हथकरघा' लोगो का अनावरण किया था और कहा था कि हथकरघा गरीबी से लड़ने में एक अस्त्र साबित हो सकता है, उसी तरह जैसे स्वतंत्रता के संघर्ष में स्वदेशी आंदोलन था। प्रधानमंत्री मानते हैं कि खादी और हथकरघा उत्पाद भी वही उत्साह प्रदान करते हैं, जैसा कि मां के प्रेम से प्राप्त होता है। हथकरघा उत्पाद जहां बड़ी संख्या में ग्रामीण आबादी को रोजगार मुहैया कराते हैं वहीं यह पर्यावरण के अनुकूल भी है।

2014 में केंद्र में जब मोदी सरकार आई तो बुनकरों की समस्याओं पर गंभीरता से ध्यान देना शुरू किया गया और राष्ट्रीय हथकरघा दिवस मनाने का निर्णय किया गया। हथकरघा दिवस मनाने के लिए 7 अगस्त का दिन इसलिए चुना गया क्योंकि इस दिन का भारत के इतिहास में विशेष महत्व है। उल्लेखनीय है कि घरेलू उत्पादों और उत्पादन इकाइयों को नया जीवन प्रदान करने के लिए 7 अगस्त 1905 को देश में स्वदेशी आंदोलन शुरू हुआ था। स्वदेशी आंदोलन की याद में ही 7 अगस्त को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस मनाने का निर्णय लिया गया। प्रधानमंत्री ने 2015 में हथकरघा दिवस की शुरुआत करते हुए कहा था कि सभी परिवार घर में कम से कम एक खादी और एक हथकरघा का उत्पाद जरूर रखें।

सरकार ने 29 जुलाई, 2015 को राजपत्र अधिसूचना के माध्यम से 7 अगस्त को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के रूप में अधिसूचित किया था। सरकार का प्रयास है कि गरीबों को सरकारी योजनाओं का लाभ मिले और हथकरघा उद्योग का सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्तिकरण किया जा सके। सरकार कहती रही है कि वह बुनकरों की आय बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। केंद्रीय अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय ने उस्ताद योजना के तहत बुनकरों के प्रशिक्षण की भी व्यवस्था कराई जिससे उन्हें तकनीकी रूप से और समृद्ध किया जा सके।

यही नहीं, 2015 में जब राष्ट्रीय हथकरघा दिवस की शुरुआत हुई तब तत्कालीन कपड़ा मंत्री स्मृति ईरानी ने हथकरघा पर बने परिधानों को लोकप्रिय बनाने और बुनकर समुदाय को मदद पहुंचाने के लक्ष्य के साथ सोशल मीडिया पर 'आई वियर हैंडलूम' अभियान की शुरुआत की थी जिसका कई मशहूर हस्तियों ने जमकर समर्थन किया था। इस अभियान के तहत मशहूर हस्तियों ने 'आई वियर हैंडलूम' हैशटैग के साथ हैंडलूम वस्त्र पहनी हुई अपनी तसवीरें भी सोशल मीडिया पर शेयर की थीं।

राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर देश भर के विभिन्न शहरों में कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं जिनमें हथकरघा उद्योग के प्रति जागरूकता लाने के अलावा बुनकरों को सम्मानित किया जा रहा है। इस दौरान खादी और हथकरघा उद्योग के लिए चल रही सरकारी योजनाओं से भी लोगों को अवगत कराया जा रहा है ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इन योजनाओं का लाभ उठा सकें।

हथकरघा उद्योग प्राचीनकाल से ही हाथ के कारीगरों की आजीविका प्रदान करता आया है। हथकरघा उद्योग से निर्मित सामानों का विदेशों में भी खूब निर्यात किया जाता है। माना जाता है कि इस उद्योग के विभिन्न कार्यों में लगभग 7 लाख व्यक्ति लगे हुए हैं। लेकिन अगर उनकी आर्थिक स्थिति की बात की जाये तो कहा जा सकता है कि तमाम सरकारी दावों के बावजूद उनकी स्थिति दयनीय ही बनी हुई है। हालांकि 2017 में सरकार ने बड़ा फैसला करते हुए कहा था कि देश में जगह जगह स्थापित बुनकर सेवा केंद्रों (डब्ल्यूएससी) पर बुनकरों को आधार व पैन कार्ड जैसी अनेक सरकारी सेवाओं की पेशकश की जाएगी। ये केंद्र बुनकरों के लिए तकनीकी मदद उपलब्ध करवाने के साथ साथ एकल खिड़की सेवा केंद्र बने हैं लेकिन सेवाओं का सही लाभ नहीं मिल पाने की शिकायतें भी बुनकर लगातार करते हैं।

वीर अब्दुल हमीद के बिना नहीं पूरी होती आजादी की दास्तान

पाकिस्तान के तरण तारण जिले में एक गांव हैं, आसल उत्ताड़। हिंदी में इसे अब 'असल उत्तर' के नाम से जानते हैं। उसकी वजह है 1965 के भारत–पाकिस्तान युद्ध में कंपनी क्वार्टरमास्टर हवलदार अब्दुल हमीद और उनके साथियों की वी. रता। वीर अब्दुल हमीद की कहानी और 'असल उत्तर' एक–दूसरे से गुंथे हुए हैं। यही वो गांव है जहां ग्रेनेडियर्स रेजिमेंट ने पाकिस्तानके पैटन टैंकों की कब्रगाह बना दी थी। अब्दुल हमीद इसी रेजिमेंट की चौथी बटालियन का हिस्सा थे। 10 सितंबर 2022 को उनका 57वां बलिदान दिवस था। 1965 युद्ध के शुरुआती दिन थे। पाकिस्तानी सेना की 1 आर्मर्ड डिविजन ने जीटी रोड पर राया और बेअस कस्बे पर कब्जा करने की नीयत से हमला बोल दिया। मकसद था बेअस नदी पर बने पुल पर कब्जा करना ताकि पंजाब का बड़ा हिस्सा बाकी भारत से अलग हो जाए। शुरुआत में पाकिस्तानी फौज को कामयाबी भी मिली, मगर फिर भारतीय सेना ने ऐसा जवाब दिया कि दुश्मन के पैटन टैंकों को छिपने की जगह नहीं मिली।

अब्दुल हमीद का नाम लिए बिना 1965 युद्ध में टैंकों की लड़ाई की दास्तान नहीं लिखी जा सकेगी। 57 साल पहले, 10 सितंबर 1965 को अब्दुल हमीद ने देश पर सर्वस्व न्योछावर कर दिया। मरणोपरांत परमवीर चक्र (भारत का सबसे बड़ा वीरता पदक) से सम्मानित अब्दुल हमीद को 'टैंक डिस्ट्रॉयर' के नाम से जाना जाता है। पांच साल ऐंटी–टैंक सेक्शन में गुजारने के बाद अब्दुल हमीद को प्रमोट कर कंपनी का क्वार्टरमास्टर बना दिया गया था। चूंकि पूरी बटालियन में 106उउ रिकॉइललेस राइफल पर हमीद से बेहतर निशाना किसी का नहीं था, इसलिए उन्हें रिकॉइललेस राइफल प्लाटून की कमान दे दी गई। 6–7 सितंबर के बीच, पाकिस्तानी सेना के तेज ऐक्शन ने भारत की चौथी माउंटेन डिविजन को संभलने का मौका नहीं दिया। बॉर्डर से 5 किलोमीटर भीतर, खेम करन पर पाकिस्तान का कब्जा हो चुका था। यह जगह आसल उत्ताड़ से 7 किलोमीटर दूर थी। भारत को नए डिफेंस प्लान की जरूरत थी। 4

ग्रेनेडियर्स के अलावा डिविजन की तीन और बटालियंस एक साथ आईं और आसल उत्ताड़ और चीमा गांव के बीच डिफेंस लाइन तैयार कर ली। असल उत्तर की लड़ाई 8 से 10 सितंबर 1965 के बीच चली। पाकिस्तानी सेना ने पैटन टैंकों (ड48) के साथ खेर करन में हमला बोल दिया। दुश्मन की ओर से काफी ज्यादा शेलिंग और टैंक से फायर हो रहा था। ऐसे में हमीद रिकॉइललेस गन (ल्ब्स्) लगी जीप लेकर पीछे चले गए। इसके बाद आर्टिलरी से भयंकर बमबारी शुरू हुई। पाकिस्तानी सेना भारत की फारवर्ड कंपनी पोजिशंस भेदने में कामयाब हो गई। दहमीद ने हथियारों की गूंज सुनी और दुश्मन के कुछ टैंकों को अपनी बटालियन की ओर आते देखा। दुश्मन चौकन्ना न हो जाए, इसलिए ग्रेनेडियर्स ने फायर रोके रखा। गन्ने के खेत में कवर लेते हुए हमीद ने अपनी बंदूक का मुंह दुश्मन के टैंकों की तरफ कर दिया। टैंक रेंज के भीतर आते ही हमीद ने अपने लोडर से गन लोड करके फायर करने को कहा। शेलिंग और टैंकों के हमले जारी थे, मगर हमीद का हौसला भी कम नहीं था। मौका पाकर अब्दुल हमीद ने कतार में आगे चल रहे दुश्मन के एक टैंक को उड़ा दिया। पलभर में वह दूसरे टैंक पास थे और उसे भी तबाह कर दिया। अपनी रिकॉइललेस गन से दुश्मन के टैंकों पर दनादन फायर झोंक रहे हमीद को उधर से आ रही गोलियों से जैसे कोई फर्क ही नहीं पड़ रहा था। एक और टैंक हमीद का शिकार बना। अब्दुल हमीद के साथी बताते हैं कि उन्होंने एक बार में 4 पैटन टैंक उड़ा दिए थे। दुश्मन के टैंक ऑपरेटर्स को अबतक समझ आ गया था कि उनपर हमला कहां से हो रहा है। उन्होंने हमीद की जीप पर मशीन गन और भारी विस्फोटक दागने शुरू कर दिए। हमीद तो अलग ही धुन में थे। वह लगातार फायरिंग करते रहे। पॉइंट–ब्लैंक रेंज से हमीद ने पाकिस्तान के चार पैटन टैंकों को तबाह कर दिया और एक को किसी लायक नहीं छोड़ा। एक पाकिस्तानी टैंक की फायरिंग लाइन में आकर वह वीरगति को प्राप्त हुए।

भारत के वीरों ने दिया पाकिस्तान को 'असल उत्तर'

अब्दुल हमीद की वीरता देखकर साथी दोगुने जोश से दुश्मन पर टूट पड़े। इतिहास के सबसे बड़े टैंक युद्धों में से एक में पाकिस्तानी सेना ने मुंह की खाई। उसके 97 टैंक तबाह कर दिए गए। एक पूरी की पूरी कैवलरी रेजिमेंट को बंदी बना लिया गया। कई टैंक भी भारत के कब्जे में आ गए। युद्ध खत्म होने के बाद असल उत्तर से करीब 10 किलोमीटर दूर पत्तन टैंकों को प्रदर्शन के लिए रखा गया। वह जगह कुछ वक्त के लिए 'पत्तन नगर' के नाम से जानी गई। अब्दुल हमीद को मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। उनकी कब्र उस जगह से 100 मीटर दूर भी नहीं है जहां से उन्होंने पाकिस्तानी टैंकों को निशाना बनाया था। पूर्वी उत्तर प्रदेश के गाजीपुर में जन्मे अब्दुल हमीद के पिता भी सेना में थे। 1954 में सेना में भर्ती हुए अब्दुल हमीद ने 1962 में चीन के खिलाफ भी युद्ध लड़ा। उनकी याद में 4 ग्रेनेडियर्स ने असल उत्तर में एक मेमोरियल बनवाया। मेमोरियल के गेट पर एक पाकिस्तानी पैटन टैंक खड़ा है, उन वीरों के सम्मान में जिन्होंने असल उत्तर की लड़ाई में हिस्सा लिया और सर्वस्व बलिदान किया।

सृष्टि के विनाश के लिए उत्तरदाई हो सकते हैं परमाणु हथियार

गोरखपुर। हिरोशिमा दिवस के अवसर पर दिग्विजय नाथ महाविद्यालय के र क्षा एवं स्ट्रेटजी विभाग द्वारा एक व्याख्यान का आयोजन किया गया अध्यक्ष प्रोफेसर ओम प्रकाश सिंह प्राचार्य दिग्विजय नाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय ने अपने संबोधन में कहा कि वर्तमान समय में परमाणु हथियार संपूर्ण सृष्टि के लिए विनाश का सामर्थ रखते हैं इनका गलत हाथों में पहुंचना किसी भी देश की सुरक्षा व्यवस्था को चुनौती ही नहीं उत्पन्न करता बल्कि संपूर्ण सृष्टि के विनाश के लिए उत्तरदाई हो सकता है। परमाणु बमों के कारण संपूर्ण विश्व में एक ऐसा वातावरण व्याप्त है जिससे परमाणु शक्तिहीन राष्ट्र अपने को सुरक्षित महसूस करते हैं और इसी सुरक्षा का लाभ बड़ी शक्तियों द्वारा उठाकर उनका परमाणु छतरी की सुरक्षा का लालच देकर अपने हितों की पूर्ति के लिए प्रयोग किया जाता है।

भारत में परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र की एकता दोहन की राजनीति को समझते हुए 1974 में स्माइलिंग बुद्ध के नाम से परमाणु परीक्षण करके यह चेतावनी दी थी कि भारत के परमाणु हथियारों के नाम पर होने वाले अनैतिक दबाव की राजनीति तथा प्रतिरोधकता को स्वीकार नहीं कर सकता। भारत अपने दूसरे परमाणु परीक्षण उपरांत अपने नाभिकीय सिद्धांत का पालन करते स्पष्ट कर चुका है कि उसका परमाणु शक्ति कार्यक्रम शांति एवं विकास कार्यों को ध्यान में रखकर न्यूनतम भैया दोहन पर आधारित है।

आज परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्रों की संख्या में वृद्धि होने के कारण किसी भी परमाणु शक्ति संपन्न देश में अपना विकी सिद्धांत राजनीति में इस बात का उल्लेख नहीं किया था कि वह पहले प्रयोग नहीं की नीति पर चलेगा। निश्चित है कि भारत में लिडल हार्ट के शांति सिद्धांत का पालन किया है जिसमें कहा गया है कि यथा संभव शक्ति अर्जित करना तथा असीम धैर्य बनाए रखना यही कारण है कि अमेरिका सहित कई परमाणु संपन्न राष्ट्र भारत को जिम्मेदार परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र के रूप में मान्यता प्रदान करते हैं और भारत के साथ विभिन्न प्रकार के नाभिकीय तकनीक एवं ऊर्जा से संबंधित समझौतों पर करार किए हुए हैं।

कार्यक्रम का संचालन विभागीय शिक्षक विकास कुमार पाठक किया।

पुण्यतिथि पर याद किए गए डॉक्टर रामदरश त्रिपाठी

गोरखपुर । वरिष्ठ पत्रकार रामदरश त्रिपाठी की 18वीं पुण्यतिथि के अवसर पर श्रद्धांजलि सभा एवं सम्मान समारोह का राम दरस त्रिपाठी सेवा संस्थान गोरखपुर के तत्वावधान मेंगत 6 अगस्त को स्वयं कॉल विजय चौक स्थित एक होटल में आओ जीत किया गया जिसमें वक्ताओं अपने–अपने अनुभवों को साझा किया। कार्यक्रम की शुरुआत राप्तीनगर स्थित उनके आवास पर हवन पूजन के साथ वैदिक परंपराओं का निर्वहन करते हुए उनकी धर्मपत्नी श्रीमती बिंदा त्रिपाठी एवं उनकी पुत्री श्रीमती सुनीता मिश्र ने ब्राह्मण भोज एवं दान पुण्य के साथ हुआ। इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में विशेष योगदान देने वाली पांच विभूतियों को अंग वस्त्र एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मा. नित किया गया जिनमें प्रमुख रूप से पत्रकारिता के लिए प्रोफेसर हर्ष कुमार सिन्हा चिकित्सा के लिए सर्जन डॉक्टर शिव शंकर शाही संगीत विद्या में गायिका डॉक्टर मिथिलेश तिवारी खेल के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय पहलवान दिनेश सिंह और समरसेबल के लिए महत्वपूर्ण योगदान दे रही श्रीमती सुधा मोदी को सम्मानित किया गया।

देश के लिए सुखद संदेश

ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकाओ ंको शिक्षित कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के प्रति बढ़ती जागरूकता देश के लिए सुखद संकेत है। देशके बीस राज्यों के 229 परिवारों पर किए गए सर्वेक्षण में जो तथ्य सामने आए हैं, वह सरकारों के लिए सन्देश है कि इसके लिए संसाधन और सुविधाके ठोस और त्वरित प्रयास किये जायं। सर्वेक्षणमें कहा गया है कि भारत के 78प्रतिशत ग्रामीण माता–पिता अपनी बेटियों को भी स्नातक या उससे आगे की पढ़ाई कराना चाहते हैं। सर्वेक्षण में यह भी खुलासा राहतकारी है कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी बेटे और बेटी का अन्तर नहीं किया जा रहा है। बेटे के समान ही बेटियों को साक्षर करने के प्रति बढ़ती रुचि देश को विकसित राष्ट्र बनाने में सहायक होगी। इसके लिए सरकारको विशेष प्रयास करने की जरूरत है, क्योंकि हमारी बालिकाएं हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा और शौर्य का डंका बजा रही हैं, लेकिन आजादी के पचहत्तर वर्ष बाद भी साक्षरता दरमें पुरुषोंसे काफी पीछे हैं। हालांकि भारत सरकारने सभीको शिक्षा प्रदान करनेके प्रति प्रतिबद्धता दिखाई है और बालिकाओं की शिक्षा पर विशेष जोर दिया है। बावजूद इसके एशिया महाद्वीप में भारत की महिलाओं का साक्षरता दर सबसे कम है। ऐसे में सरकार को प्राथमिक शिक्षा के साथ ही उच्च शिक्षा को सर्वग्राही बनाना होगा। इसके लिए गांव तक स्नातक कालेज खोले जायं जिससे वहां की दबी प्रतिभा आगे आए और प्रतियोगी परीक्षाओं में भी अपनी भागीदारी कर सकें। एक बालिका के शिक्षित होने से एक परिवार शिक्षित होता है, इसलिए सरकार को बालिकाओं को शत–प्रतिशत साक्षर बन. ानेके लिए जरूरी संसाधन उपलब्ध कराने होंगे। सर्वेक्षण की, रिपोर्ट जो सरकार ने जारी की है उसको प्रभावी बनाने के लिए ठोस कार्य किए जाने की अनिवार्य आवश्यकता है। देश को शक्तिशाली बनाने के लिए शत–प्रतिशत महिलाओं को साक्षर बनाया जाना जरूरी है।

लिम्फटिक फाइलेरियासिस उन्मूलन पर कार्यशाला

गोरखपुर। राष्ट्रीय सेवा योजना, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर आवासीय परिसर के तत्वाधान में लिम्फटिक फाइलेरियासिस उन्मूलन पर एक कार्यशाला का आयोजन गत आठ अगस्त, को 11 बजे राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यालय पर किया गया।

कार्यक्रम में अंगद सिंह, डी. एम.ओ., राजेश चौबे, ए.एम.ओ., प्राच पाण्डेय, पी.सी.आई. एवं राहुल तिवारी, पी.सी.आई. एवं कार्यक्रम आये सभी अतिथियों को गोमेन्टम भेज कर उनका स्वागत अभिनन्दन किया।

कार्यक्रम में अंगद सिंह, डी. एम.ओ. ने कहा कि फाइलेरिया उन्मूलन के तहत मनुष्य को हाथीपांव (फीलपांव) की बीमारी होती है। जिसके बचाव के लिए डीईसी, बच्चों के पेट के कीडे मारने की एल्बेडाजॉल और आइवरमेक्टिन दवा ि खलाई जाती है। इस बीमारी का जागरूकता हेतु घर–घर जाकर अपने सामने ही दवा पिलवायें और दो वर्षसे कम बच्चों तथा गर्भवती महिलाओं दवा नहीं पिलाने की बात कही। राजेश चौबे, ए.एम.ओ. ने कहा कि फाइलेरिया की बीमारी में सामान्य लोगों को इन दवाओं के खाने से दुष्प्रभाव नहीं होते है। अगर किसी को दवा खाने के बाद उल्टी, चक्कर, खुजली या जी मिचलाने जैसे लक्षण होते है तो यह इस बात का प्रतीक है कि उस व्यक्ति के शरीर में फाइलेरिया के कृमि माइक्रोफाइलेरिया मौजूद है। कार्यक्रम का संच. ालन डॉ. जितेन्द्र कुमार कार्यक्रम समन्वयक, राष्ट्रीय सेवा योजना ने किया।

कार्यक्रम में कमलेश यादव, रेहान अली, अनामिका, अतुल कुमार, वैष्णवी यादव आदि लगभग 800 स्वयंसेवकों/स्वयंसेविकाओं ने प्रतिभाग किया। अन्त में कार्यक्रम अधिकारी डॉ. सुशील कुमार सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

मजदूर, कर्मचारी और जनविरोधी नीतियों के खिलाफ मजदूर उतरे आन्दोलन पर : राममूर्ति

गोरखपुर। गोरखपुर श्रम आयुक्त कार्यालय पर उप श्रम आयुक्त गोरखपुर के माध्यम से विभिन्न ट्रेड यूनियन संगठनों के कार्यकर्ताओं के द्वारा माननीय मुख्यमंत्री व प्रधानमंत्री भारत सरकार को मजदूर हितों के मुद्दे पर ज्ञापन दिया गया व धरना भी दिया गया । मांगों के प्रमुख बिंदु इस प्रकार है–उत्तर प्रदेश में न्यूनतम वेतन समिति का गठन किया जाए, प्रदेश में श्रम कानूनों का पालन सुनिश्चित किया जाए, इंजीनियरिंग, होटल, बीड़ी, कालीन, डिस्टिलरी व शुगर उद्योग में वेतन पुनरीक्षण के लिए समितियां का गठन किया जाए, नियमित प्रकृति के काम पर रखे गए संविदा /ठेका मजदूरों को नियमित किया जाए । समान काम के लिए समान वेतन दिया जाए, समस्त मजदूरों को अनिवार्य रूप से वेतन पर्ची, (ई एस आई), ईपीएफ कार्ड दिया जाए । रजिस्टर में उनका नाम दर्ज हो, नेशनल पेंशन स्कीम की जगह पुरानी पेंशन योजना बहाल की जाए, चारों श्रम संहिता रद्द किए जाए, स्कीम वर्कर्स को राज्य कर्मचारी घोषित किया जाए, उनको 26000 प्रतिमाह मानदेय तथा रुपए 10,000 मासिक पेंशन दिया जाए, शुगर उद्योग में हुए पिछले वेतन पुनरीक्षण को सभी मजदूरों पर लागू किया जाए, उत्तर प्रदेश में आंदोलन के दौरान निष्कासित/निलंबित किए गए सभी बिजली कर्मचारियों /अधिकारियों /संविदा कर्मियों को वापस लिया जाए, निर्माण मजदूरों के लिए कल्याणकारी योजनाओं को शुरू किया जाय, उत्तर प्रदेश सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड में पंजीकृत 5 साल पुराने व 60 वर्ष की उम्र पूरा करने वाले सभी सदस्यों को तीन हजार प्रति माह पेंशन दी जाए, ईपीएफ से आच्छादित सभी मजदूरों को कम से कम दस हजार रूपये प्रतिमाह पेंशन दिया जाए और पेंशन को महंगाई से लिंक किया जाए, घरेलू कामगारों और वेस्ट वर्कर्स को मजदूर का दर्जा दिया जाए ।

उनके लिए बोर्ड का गठन किया जाए, वन, कृषि तथा पशुपालन विभाग में कार्यरत दैनिक श्रमिक , आउटसोर्स कर्मचारियों को अनुसूचित उद्योगों के लिए निर्धारित न्यूनतम मजदूरी का भुगतान सुनिश्चित किया जाए, समस्त सरकारी विभागों, निगमों में कार्यरत आउटसोर्स और संविदा कर्मियों को ईएसआई और भविष्य निधि योजना से आच्छादित किया जाए और उन्हें निर्धारित न्यूनतम मजदूरी का भुगतान सुनिश्चित किया जाए।

उनको सप्ताहिक अवकाश दिया जाए, निगमों, निकायों और स्वायत्त संस्थानों में कार्यरत वर्कचार्ज , दैनिक वेतन भोगी, संविदा आउटसोर्स और मृतक आश्रित कर्मचारियों को नियमित किया जाए, ई–श्रम और बीओसी बोर्ड में पंजीकृत श्रमिकों को आयुष्मान कार्ड जारी किया जाए, रेलवे /बैंक /बीमा के विभिन्न प्रतिष्ठानों में कार्यरत आउटसोर्स/संविदा श्रमिकों को केंद्र सरकार द्वारा जारी न्यूनतम वेतन और भविष्य निधि योजना से आच्छादित किया जाए ।

अपने प्रतिनिधि मंडल द्वारा मांग करने वाले संगठन है, एटक (ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन काउंसिल) एचएमएस (हिंद मजदूर सभा), सीटू (सेंट्रल ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियन), इंटक (इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस), एआईयूटीयूसी सेवा (ऑल इंडिया यूनाइटेड ट्रेड यूनियन सेंटर), टीयूसीसी (ट्रेड यूनियन कोऑर्डिनेशन सेंटर), एआईसीसीटीयू (ऑल इंडिया सेंट्रल कौंसिल ऑफ़ ट्रेड यूनियंस , एक्टू (ऑल इंडिया सेंटर ऑफ ट्रेड यूनियंस) एवं अन्य स्वतंत्र फेडरेशन। उपरोक्त धरना प्रदर्शन में प्रमुख रूप से राममूर्ति, अश्वनी पांडे , डॉ. आशीष कुमार सिंह, गौतम लाल श्रीवास्तव , जावेद अजीज, राजेश साहनी, जिलाजित पांडे, अटल बिहारी सिंह, संदीप श्रीवास्तव, उमाशंकर मझवार, बृजेश मिश्रा, अल्ताफ , बुलंद अख्तर, नंदकिशोर मौर्य आदि रहे।

निधन पर शोक

गोरखपुर। समाचार पत्र विक्रेता संघ की एक शोक सभा टाउनहाल के मैदान रानी लक्ष्मी बाई मूर्ति के पास जिलाध्यक्ष उमाशंकर मझवार की अध्यक्षता में हुई। गोर खनाथ मन्दिर के प्रबन्धक द्वारिका तिवारी की पत्नी पुष्पा तिवारी 66 वर्ष गोरखनाथ, निवासी के निधन होने पर गहरा शोक व्यक्त किया गया दो मिनट मौन रह कर ईश्वर से प्रार्थना किया गया कि भगवान उनकी आत्मा को शान्ती प्रदान करें कार्यक्रम में गुरु गिरिवर मिश्र, राम नरायन मिश्र, विनोद तिवारी, दिनेश चन्द अग्रहरी, रामाज्ञा निषाद, नवनित कुमार यादव, राकेश निषाद, अनन्तलाल गुप्ता, धर्मेन्द्र कुमार, सुनील कुमार गुप्ता, मुक्तिनाथ अग्रहरी, सुभाष चन्द्र मझवार, राजकुमार मझवार, राजेन्द्र कुमार मझवार, महेन्द्र सिंह राणा एडवोकेट–जिलाध्यक्ष राष्ट्रीय जनता दल, आदि लोग उपस्थित थे।

विश्व आदिवासी दिवस धूमधाम के साथ मना

गोरखपुर। गोंडवाना विकास सेवा संस्था के तत्वावधान में गत दिनों विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर कलेक्ट्रेट सभागार में विश्व आदिवासी दिवस धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर संस्था के सदस्यों ने सचिव सतीश चंद्र गोंड के नेतृत्व में जिलाधिकारी को एक ज्ञापन सौंप कर जल्द से जल्द गोंड जाति को अनुसूचित जनजाति का प्रमाण पत्र जारी करने की मांग की।

सतीश चंद्र कुंड ने बताया कि जनपद गोरखपुर में गोंड जनजाति के लोकगीत कई वर्षों से निवासरत हैं अनुसूचित जाति के अंतर्गत आते हैं लेकिन इस जनजाति के समुदाय को अभी तक अनुसूचित जनजाति का जाति प्रमाण पत्र प्रशासनिक उदासीनता के कारण नहीं प्राप्त हो पाया। जब तू उत्तर प्रदेश के अन्य जनपदों जैसे गाजीपुर बलिया देवरिया सहित कई जनपद के गोंड जाति को प्रमाण पत्र प्राप्त हो चुका है।

गोरखपुर में झमाझम बारिश के दौरान शहरों की मुख्य सड़कों पर हुईं जल–जमाव की स्थितियां

आदिवासी के अस्तित्व एवं अस्मिता की रक्षा हो

आदिवासी महिलाएं आदिवासी समुदाय की रीढ़ है, वे पारं. परिक पैतृक ज्ञान के संरक्षण और प्रसारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्राकृतिक संसाधनों की देखभाल और वैज्ञानिक ज्ञान के रखवाले के रूप में उनकी एक अभिन्न सामूहिक और सामुदायिक भूमिका है।

अन्तरराष्ट्रीय आदिवासी दिवस, विश्व में रहने आदिवासी लोगों के मूलभूत अधिकारों जल, जंगल, जमीन को बढ़ावा देने और उनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और न्यायिक सुरक्षा के लिए प्रत्येक वर्ष 9 अगस्त को मनाया जाता है। इस वर्ष विश्व में शांति कायम हो की थीम पर यह दिवस मनाया जायेगा। यह दिवस उन उपलब्धियों और योगदानों को भी स्वीकार करता है जो वनवासी लोग पर्यावरण संरक्षण, आजादी, महा आंदोलनों, जैसे विश्व के मुद्दों को बेहतर बनाने के लिए करते हैं। यह पहली बार संयुक्त राष्ट्र की महासभा द्वारा दिसंबर 1994 में घोषित किया गया था। ग्रह पर कुल मानव आबादी का लगभग 47 करोड़ हिस्सा आदिवासी लोगों का है। इसके अलावा, दुनिया में 100 से अधिक गैर–संपर्क जनजातियाँ हैं। दुनिया में बोली जाने वाली 7000 भाषाओं में से 4000 भाषाएँ आदिवासी लोगों द्वारा बोली जाती हैं। आदिवासी लोग प्रकृति की पूजा करते हैं, प्रकृति में जीते है, जल, जंगल एवं जमीन से जुड़े इन लोगों ने प्रकृति एवं पर्यावरण को संरक्षित कर रखा है।

आदिवासी महिलाएं आदिवासी समुदाय की रीढ़ है, वे पारंपरिक पैतृक ज्ञान के संरक्षण और प्रसारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्राकृतिक संसाधनों की देखभाल और वैज्ञानिक ज्ञान के रखवाले के रूप में उनकी एक अभिन्न सामूहिक और सामुदायिक भूमिका है। दुनिया भर में रहने वाले 47 करोड़ आदिवासी और जनजाति समुदायों के सामने जंगलों का कटना और उनकी पारंपरिक जमीन की चोरी सबसे बड़ी चुनौती है। वे धरती पर जैव विविधता वाले 80 प्रतिशत इलाके के संरक्षक हैं लेकिन बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लोभ, हथियारबंद विवाद और पर्यावरण संरक्षण संस्थानों की वजह से बहुत से समुदायों की आजीविका एवं अस्तित्व खतरे में हैं, ग्लोबल वॉर्मिंग का असर हालात को और खराब कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार आदिवासी जनजातियां 90 देशों में फैली हैं, 5,000 अलग अलग संस्कृतियां और 4,000 विभिन्न भाषाएं, इस बहुलता के बावजूद उन्होंने अनेक संघर्ष झेले हैं और आज भी दुनिया में आदिवासी समुदाय खतरे में हैं। भारत सहित दुनिया की आदिवासी महिलाएं हिंसा, यौन शोषण एवं अपराध की शिकार है। मणिपुर में 19 जुलाई, 2023 को दो आदिवासी महिलाओं को निर्वस्त्र कर गांव में घुमाने एवं पश्चिम बंगाल के मालदा में भीड़ ने दो आदिवासी महिलाओं की पिटाई की, फिर उन्हें अर्धनग्न कर दिया गया। आदिवासी महिलाओं के साथ होने वाली ऐसी घटनाएं देश–विदेश के सभ्य समाजों को झकझोर दिया है।

इस वर्ष का 'विश्व आदिवासी दिवस' भारत के लिये विशेष महत्वपूर्ण है। क्योंकि भारत की नई राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू वनवासी समुदाय से जुड़ी होने के साथ–साथ एक महिला है, उन्होंने प्रकृति एवं पर्यावरण के संकटों को करीब से देखा है, यह भारत की विकराल होती समस्या है, जिसका गहराना जीवन को अंधेरा में धकेलना है, अतः वे इस समस्या के दर्द को गहराई से महसूस करती है, तभी उन्होंने कहा कि मेरा तो जन्म उस जनजातीय परंपरा में हुआ है जिसने हजारों वर्षों से प्रकृति के साथ तालमेल बनाकर जीवन को आगे बढ़ाया है। मैंने जंगल और जलाशयों के महत्व को अपने जीवन में महसूस किया है। हम प्रकृति से जरूरी संसाधन लेते हैं और उतनी ही श्रद्धा से प्रकृति की सेवा भी करते हैं। जल, जंगल और जमीन इन तीन तत्वों से पृथ्वी और प्रकृति का निर्माण होता है। यदि यह तत्व न हों तो पृथ्वी और प्रकृति इन तीन तत्वों के बिना अधूरी है। विश्व में ज्यादातर समृद्ध देश वही माने जाते हैं जहां इन तीनों तत्वों का बाहुल्य है। भारत भी इसी समृद्धता का देश है, लेकिन इनकी समृद्धता की उपेक्षा के कारण अनेक समस्याएं विकास की बड़ी बाधा बनती जा रही है। संभव है कि द्रौपदी मुर्मू के नेतृत्व में प्रकृति एवं पर्यावरण की समस्या के साथ–साथ आदिवासी महिलाओं से जुड़ी समस्याओं का समाधान होगा।

आदिवासियों में एक बड़ी समस्या धर्मपरिवर्तन की है। गुजरात के आदिवासी क्षेत्र में सुखी परिवार फाउण्डेशन का संचालन आदिवासी संत गणि राजेन्द्र विजयजी के नेतृत्व में वर्ष 2005 से करते हुए हम शिक्षा, सेवा, जनकल्याण की अनेक गतिविधियों को आकार दे रहे हैं, वहां मैंने आदिवासी समस्याओं को बहुत करीब से देखा हैं, उनमें सबसे बड़ी समस्या धर्म परिवर्तन एवं महिलाओं एवं बालिकाओं का लापता होना है। प्रलोभनों एवं साम्प्रदायिक ताकतों के कारण कई आदिवासी अपने धर्म को बदलकर आदिवासी समाज से बाहर हो रहे हैं जिसमें ईसाई धर्म को सर्वाधिक स्वीकार गया है। एशिया में विशेषकर भारत के आदिवासी भी इस मानसिकता की ओर तेजी से बढ़ रहे है, ईसाई मिश्नरियों ने भारत के आदिवासी क्षेत्र छतीसगढ़, मध्यप्रदेश, ओडिशा, अंडमान निकोबार, झारखंड, गुजरात, महाराष्ट्र में धर्मांतरण के लिये विद्यालयों एवं छात्रावासों में सफल अभियान चलाया है। ऐसे में आदिवासी की अपनी संस्कृति एवं उनका अस्तित्व खतरा में आ गया। आदिवासी अर्थात जो प्रारंभ से वनों में रहता आया है। करीब 400 पीढ़ियों पूर्व सभी भारतीय वन में ही रहते थे और वे आदिवासी थे परंतु विकासक्रम के चलते पहले ग्राम बने फिर कस्बे और अंत में नगर, महानगर। यही से विभाजन होना प्रारंभ हुआ। जो वन में रह गए वे वनावासी, जो गांव में रह गए वे ग्रामवासी और जो नगर में चले गए वे नगरवासी कहलाने लगे। भारत में लगभग 25 प्रतिशत वन क्षेत्र है, इसके अधिकांश हिस्से में आदिवासी समुदाय रहता है। लगभग नब्बे प्रतिशत खनिज सम्पदा, प्रमुख औषधियां एवं मूल्यवान खाद्य पदार्थ इन्हीं आदिवासी क्षेत्रों में हैं। भारत में कुल आबादी का लगभग 11 प्रतिशत आदिवासी समाज है। स्वतंत्रता आन्दोलन में आदिवासी समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ऐसे अनेक महान् आदिवासी हुए हैं जिन्होंने भारत की मिट्टी एवं उसके स्वतंत्र अस्तित्व–आजादी के लिए अपना बलिदान एवं महान योगदान दिया। ऐसे महान वीर आदिवासियों से भारत का इतिहास समृद्ध है, जिनमें अप्पा साहब, तात्या टोपे, डा. बी.आर. अम्बेडकर, जयपाल सिंह मुण्डा, शहीद वीर नारायण सिंह, शहीद गंडाधुरा, शहीद रानी दुर्गावाती, शहीद बीरसा मुंडा, शहीद सिद्धों, कानु, शहीद तिलका मांझी, शहीद गेंद सिंह, झाड़ा सिरहा जैसे महान आदिवासियों ने अपना बलिदान देकर समाज एवं देश के लिये एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। फिर क्या कारण है कि इस जीवंत एवं मुख्य समाज को देश की मूल धारा से काटने के प्रयास निरन्तर किये जा रहे हैं। आजादी के बाद बनी सभी सरकारों ने इस समाज की उपेक्षा की है। यही कारण है कि यह समाज अनेक समस्याओं से घिरा है। अन्तर्राष्ट्रीय आदिवासी दिवस मनाते हुए हमें आदिवासी समाज के अस्तित्व एवं अस्मिता को धुंधलाने के प्रयासों को नियंत्रित करने पर चिन्तन करना होगा। क्योंकि यह दिवस पूरी दुनिया में आदिवासी जन–जीवन को समर्पित किया गया है, ताकि आदिवासियों के उन्नत, स्वस्थ, समतामूलक एवं खुशहाल जीवन की नयी पगडंडी बने, विचार–चर्चाएं आयोजित हो, सरकारें भी सक्रिय होकर आदिवासी कल्याण की योजनाओं को लागू करें।

राजनीतिक स्वार्थ के चलते हजारों वर्षों से जंगलों और पहाड़ी इलाकों में रहने वाले आदिवासियों को हमेशा से दबाया और कुचला जाता रहा है जिससे उनकी जिन्दगी अभावग्रस्त ही रही है। केंद्र सरकार आदिवासियों के नाम पर हर साल हजारों करोड़ों रुपए का प्रावधान बजट में करती है। इसके बाद भी उनकी आर्थिक स्थिति, जीवन स्तर में कोई बदलाव नहीं आया है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने आदिवासी क्षेत्रों में घुसपैठ की है जिससे भूमि अधिग्रहण काफी हुआ है। आदिवासियों की जमीन पर अब वे खुद मकान बना कर रह रहे हैं, बड़े कारखाने एवं उद्योग स्थापित कर रहे हैं, कृषि के साथ–साथ वे यहाँ व्यवसाय भी कर रहे हैं। भूमि हस्तांतरण एक मुख्य कारण है जिससे आज आदिवासियों की आर्थिक स्थिति दयनीय हुई है। माना जाता है कि यही कंपनियां आदिवासी क्षेत्रों में युवाओं को तरह–तरह के प्रलोभन लेकर उन्हें गुमराह कर रही है, अपनी जड़ों से कटने को विवश कर रही है। उनका धर्मान्तरण किया जा रहा है। उन्हें राष्ट्र–विरोधी हरकतों के लिये उकसाया जाता है। आज आदिवासी समाज इसलिए खतरे में नहीं है कि सरकारों की उपेक्षाएं बढ़ रही है बल्कि उपेक्षापूर्ण स्थितियां सदैव रही है– कभी कम और कभी ज्यादा। सबसे खतरे वाली बात यह है कि आदिवासी समाज की अपनी ही संस्कृति एवं जीवनशैली के प्रति आस्था कम होती जा रही है। अन्तराष्ट्रीय आदिवासी दिवस मनाने की सार्थकता तभी है जब हम इस जीवंत समाज को उसी के परिवेश में उन्नति के नये शिखर दें। इस दृष्टि से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नये भारत की परिकल्पना को आदिवासी समाज बहुत ही आशाभरी नजरों से देख रहा है।

भारतीय शिक्षा पद्धति में कई बदलाव एवं स्वीकार्यता बढ़ी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय दृष्टि के जो अभिनव आधाम जोड़े गये हैं, आने वाली पीढ़ी को काबिल बनाने के साथ ही एक अच्छा इनसान बनाने की कसौटी पर खरे उतरते दिखाई देते हैं। भले ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मूल स्वरूप में कुछ बंदलाव होने शेष हैं परन्तु इस दिशा में कदम बढ़ाकर सरकार ने भारतीय मूल्यों से ओत–प्रोत एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की नींव रखने का प्रयास किया है जो शिक्षण–प्रशिक्षण के वर्तमान परिवेश को बदलनेके साथ ही एक नये शैक्षणिक परिदृश्य को सृजित करेगा।

विगत दिनों राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू हुए तीन वर्ष पूरे हो गये, इस उपलक्ष्य में आयोजित एक कार्यक्रम में प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने इसे भारतीय मूल्यों से पोषित बताया और कहा कि इससे भारतीय भाषाएं समृद्ध और सशक्त होंगी। निश्चित तौरपर राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लागू होने के बाद भारतीय शिक्षा पद्धति में कई बदलाव देखे गये हैं, साथ ही हाशिये पर पहुंच चुकी भारतीय भाषाओं की स्वीकार्यता बढ़ी है।

मैकाले पद्धति के लागू होने से पहले भारतीय शिक्षा व्यवस्था के केन्द्र में ज्ञानार्जन था, इसमें न ही भाषाई तिरस्कार था और न ही कोई भारतीय भाषा किसी दूसरी भारतीय भाषा से छोटी ही थी। मैकाले शिक्षा व्यवस्था के रक्तबीज से ऊपजे वामपंथी विद्वानों ने एक ऐसा चक्रव्यूह रचा जिसने भारतीय शिक्षा व्यवस्था के मूल स्वरूप को पूरी तरह से विकृत कर दिया। आजादी के सात दशक बीत जाने के बाद भी हमारे देश में मैकाले पद्धति पुष्पित–पल्लवित होती रही और ज्ञानको अंग्रेजियत से पहचाना जाने लगा जिसका परिणाम यह हुआ कि अन्य भारतीय भाषाएं पीछे छूटती चली गईं और इस कसौटी पर खरा न उतरनेवाला व्यक्ति भाषायीहीनता का शिकार होता गया। ऐसे में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के जरिये मूल्यविहीन होती शिक्षा व्यवस्था का कायाकल्प किया जा सकता है।

प्राचीन काल से ही भारत अपने शैक्षणिक उपलंब्धियों के लिए विश्वविख्यात रहा है। सदियों से यहां का शैक्षणिक वातावरण न सिर्फ दुनिया को आकर्षित करता रहा है अपितु अपने ज्ञान–दर्शनसे सभ्य एवं आदर्श समाज के निर्माण में योगदान भी देता रहा है। हमारे प्राचीन ग्रन्थ न सिर्फ भारतीय शिक्षा नीति एवं दृष्टि को स्पष्ट करते हैं अपितु समाज के सर्वांगीण विकास की धुरी रही शिक्षा व्यवस्था एवं उसकी प्रासंगिकता को भी दर्शाते हैं। गुरुकुल परम्परा को आत्मसात करने वाली शिक्षा व्यवस्था में गुरु को सृजनकर्ता की संज्ञा दी जाती है, जिसमें राजा और रंक दोनों के लिए समान शिक्षा व्यवस्था की बात की गयी है। यह शिक्षा व्यवस्था एक तरफ चरित्र निर्माण की बात करती है तो वहीं दूसरी तरफ कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी जीवन पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। भाषायी वैविध्यता वाले भारत में प्रत्येक भाषा को उचित सम्मान प्राप्त होता है, जो इसकी समग्रता के परिचायक होते हैं। नालन्दा एवं तक्षशिला जैसे विद्या केन्द्र न सिर्फ भारतीय दर्शन का बोध कराते हैं अपितु ज्ञान–पुंज को विश्व में पल्लवित करने का कार्य भी करते हैं। अनेकों विदेशी विद्वानों ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को व्यक्तित्व निर्माण के आधारशिला के रूप में देखा एवं इसके बारे में लिखा। शिक्षा मनुष्य के मस्तिष्क का विकास करने के साथ ही उसके अन्दर आनुभविक मूल्यों की समझ विकसित करती है। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को मात्र साक्षर न बनाकर उसे शिक्षित करने से है जो तभी सम्भव है जब हम शिक्षण व्यवस्था को व्यक्ति पर थोपे नहीं अपितु उसे आवश्यकतानुसार विकल्प चुनने की स्वतंत्रता प्रदान करें। छात्र को अपनी मातृभाषा में शिक्षा का विकल्प उपलब्ध हो क्योंकि विज्ञान भी इस बात को महत्व देता है कि मातृभाषा में प्राप्त अन्तर्वस्तु की ग्राह्यता अधिक होती है। प्राथमिक स्तरपर मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने की बात करने वाली राष्ट्रीय शिक्षा नीति अंग्रेजी के बोझ से दब रहे उन मासुम नौनिहालों को बचाने का प्रयत्न करती दिखती है जो मैकाले के बुने जाल से कभी निकल नहीं पाते।

आधुनिक भारत में शिक्षा जगत के सुपरिचित एवं सशक्त हस्ताक्षर रहे डा. राधाकृष्णन के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य शिक्षार्थी के मस्तिष्क में तथ्य ठूंसना नहीं है अपितु शिक्षार्थी के मस्तिष्क को इस प्रकार से विकसित करना है कि वह प्रस्तुत तथ्य को आसानी से समझ सके और व्यावहारिक जीवन में उसका उपयोग कर सके। प्रस्तुत राष्ट्रीय शिक्षा नीति में डा. राधाकृष्णन के विचारों के अनुरूप व्यक्तित्व विकास पर बल दिया गया है जिसका लक्ष्य साक्षरता दर बढ़ाना नहीं है अपितु लोगों को इस प्रकार से शिक्षित करना है जिससे वे अपने जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना कर सकें। यह शिक्षा नीति शिक्षण व्यवस्थाम लचीलापन लाने की बात भी करती है जिससे शिक्षक स्थानीय परिवेश को ध्यान में रखकर अध्यापन कार्य कर सके, साथ ही साथ पाठ्यक्रम बनाते समय स्थानीय भाषा, संस्कृति, एवं साहित्य को भी स्थान दिया जा सके। तकनीकी एवं नवाचारों को समझने के लिए भारतीय भाषाओं में अन्तर्वस्तु उपलब्ध कराने के साथ ही इच्छानुसार विषय चुनने अथवा एक साथ ऐच्छिक विषय का चुनाव करने की आजादी प्रदान करने वाली यह नीति निश्चय ही भारतीय शिक्षा व्यवस्था को एक नया स्वरूप प्रदान करेगी, जिसमें कोई विज्ञान विषय का छात्र इच्छानुसार कला अथवा अन्य विषयों से भी जुड़ सकेगा। यह शिक्षा नीति समग्र और बहु–विषयक शिक्षापर भी बल देती है जो विद्यार्थी की समझ विकसित करने के साथ ही उसके आर्थिकोपर्जन में सहायक हो सकती है। भारतीय समाज में शिक्षक को समाज का सबसे महत्वपूर्ण अंग माना गया है जो एक कुम्भार की भांति विद्यार्थी के व्यक्तित्व को आकार प्रदान करता है। कुम्हार जितना अधिक चपल और कुशल होगा, वह बर्तन को उतना ही अच्छा बना पायेगा अर्थात एक कुशल शिक्षक ही विद्यार्थी के व्यक्तित्व को निखार सकता है, इसके लिए शिक्षक के चयन एवं समयसापेक्ष नवाचारों से उसे जोड़ने को बाल भी की गयी है किसी भी शिक्षण व्यवस्था में शिक्षक ही उसका मेरुदण्ड होता है।

अतः यह आवश्यक है कि भारतीय समाज में भगवान से भी पहले स्थान पाने वाले अपने उत्तरदायित्व को समझें एवं उनका निर्वहन करें।

गुरु पिछले कुछ दशक में शिक्षा की दशा एवं दिशा निर्धारित करने में आर्थिक कारक प्रभावी दिखे हैं जिससे सामाजिक स्तर पर विषमता बढ़ी है। अच्छी आर्थिक स्थिति होना बड़े संस्थानों में प्रवेश का अपरिहार्य अंग बन गया है जिससे उच्च शिक्षा का मूल उद्देश्य बाधित होता दिखता है। नई नीति ऐसे शैक्षिक परिवेश पर भी कुठाराघात करती है। भारत को जीवन्त एवं ज्याय संगत ज्ञान समाज में पुनः स्थापित करने के उद्देश्य से शैक्षिणक ढांचों में परिवर्तन की बात की गई है जिससे भारत एक बार फिर से विश्व में ज्ञान के क्षितिज को छू सके। समाज एवं राष्ट्र के उत्तरदायित्वों से परिचित कराने एवं छात्र के अन्दर नैतिक मूल्यों को भरने के लिए भी कार्य योजना दी गयी है जो आदर्श भारतीय समाज का अनिवार्य अंग है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का मानना था कि व्यक्ति अपनी मातृभाषा में शिक्षा को अधिक रुचि एवं सहजता के साथ ग्रहण कर सकता है। दुनिया के कई देश अपनी भाषा, संस्कृति एवं परम्पराओं को शिक्षा व्यवस्था के अनिवार्य घटक के रूप में स्थापित कर चुके हैं। ऐसे में यह समीचीन है कि सदियों से ज्ञान का केन्द्र रहे भारत में एक ऐसी शिक्षा पद्धति लागू हो, जिसमें भारतीयता का बोध हो, जो भारतीय दृष्टि से विश्व को परिचित करा सके, जो हमें आत्मग्लानि से निकालकर आत्मविश्वास के पथ पर अग्रसर कर सके। इस शिक्षा नीति के माध्यम से भारतीयता को स्थापित करने का प्रयास भी सफल होता दिखेगा जो एक बार फिर भारतीय ज्ञान पताका को विश्व पटलपर फहराने के लिए आशान्वित है।

वैश्वीकरण के इस दौर में तकनीकी ने भले ही सूचना का अम्बार लगा दिया है परन्तु वसुधैव कुटुम्बकम के मूल उद्देश्य को समझने में युवा वर्ग असफल दिखता है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले युवक का बाजारोन्मुखी व्यावहार न सिर्फ संवेदनहीन समाज के निर्माण को आतुर दिखता है अपितु पूरे विश्व को मानवता का पाठ पढ़ाने वाले भारत में नैतिक पतन को भी देखा जा सकता है। प्रश्न यह नहीं है कि हम कितने आधुनिक हुए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय दृष्टि के जो अभिनव आधाम जोड़े गये हैं, आने वाली पीढ़ी को काबिल बनाने के साथ ही एक अच्छा इनसान बनाने की कसौटी पर खरे उतरते दिखाई देते हैं। भले ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मूल स्वरूप में कुछ बंदलाव होने शेष हैं परन्तु इस दिशा में कदम बढ़ाकर सरकार ने भारतीय मूल्यों से ओत–प्रोत एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की नींव रखने का प्रयास किया है जो शिक्षण–प्रशिक्षण के वर्तमान परिवेश को बदलनेके साथ ही एक नये शैक्षणिक परिदृश्य को सृजित करेगा।

अहिल्या

आज देवराज इंद्र के छल–प्रपंच से आहत ऋषिभार्या पतिव्रता अहिल्या दु खी तो हुई, पर विचलित नहीं ; और न हीं डरी। पूरा माजरा उसे समझ आ गया। अपने पति गौतम ऋषि के शाप का प्रभाव पड़ने से पहले वह इंद्र पर टूट पड़ी। ऋषिवर गौतम भौचक्के रह गये। तभी देवगण नीलगगन से पुष्पवर्षा करने लगे। सारे पुष्प सती अहिल्या पर ही बरस रहे थे। देवगण कह रहे थे कि आज अहिल्या की यह पहल अन्य अहिल्याओं के लिए नितांत आवश्यक है।

टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"
घोटिया–बालोद (छत्तीसगढ़)

नाबालिग के साथ हैवानियत

राजस्थान से एक निर्मम हत्या का मामला सामने आया है। एक नाबालिग बच्ची के साथ दरिंदगी करके उसे आग की भट्टी में जला दिया गया। बच्ची घर पर पाले जाने वाले पशुओं को चराने लेकर गयी थी देर रात तक बच्ची घर नहीं लौटी तो परिवार परेशान हो गया और उसे ढूंढ़ने लगा। पता चला कि एक भट्टी के पास लड़की के जूते मिले हैं। भट्टी में आग जल रही थी। परिवार ये देखकर सन्न रह गया। राजस्थान में दरिंदगी और इंसानियत को शर्मशार करने वाला यह पहला मामला नहीं हैं। पिछले एक साल में कई हैवानियत की घटनाएं राजस्थान से सामने आई हैं। स्थानीय लोगों ने आरोप लगाया है कि भट्टी में डालकर जलाने से पहले लड़की के साथ दुष्कर्म किया गया। पुलिस ने बताया कि कोयला भट्टी के पास

परिवार वालों ने उसमें देखा तो उन्हें लड़की का कंगन और कुछ हड्डियां मिलीं। पुलिस ने नाबालिग की हत्या से पहले दुष्कर्म की आशंका से इनकार नहीं किया है। साथ ही कहा कि घटना की जांच की जा रही है। वहीं, घटना की जानकारी पर इलाके में स्थानीय लोग जमा हो गये।

भारतीय जनता पार्टी के नेता कालूलाल गुर्जर भी गांव पहुंचे और पीड़ित परिजनों से मुलाकात की। गुर्जरने आरोप लगाया कि लड़की के साथ दुष्कर्म किया गया और शवको भट्टीमें जला दिया गया। उन्होंने आरोप लगाया कि पुलिस ने मामले में तुरंत काररवाई नहीं की और कालबेलिया जनजातिके संदिग्ध आरोपी को ग्रामीणोंने पकड़ पुलिसको सौंपा। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी ने इस घटना को लेकर राज्य सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने ट्वीट किया, भीलवाड़ा में रात को जो घटना घटित हुई है, वह सभी को हिला देने वाली है। लानत है प्रदेश कांग्रेस सरकार पर जो महिलाओं के खिलाफ अपराध पर दूसरे राज्यों को कोसते हैं, लेकिन अपने राज्यों के अपराध पर बिल्कुल नियंत्रण नहीं है।

–रेणु तिवारी

'परीक्षा बनी जंजाल' युवाओं की ज़िंदगी 'बदहाल'

युवाओं की जिंदगी बर्बाद करने मे लगे हुए हैं, व्यवस्था राम भरोसे। बच्चों का भविष्य, करियर खिलौना मान लिया है क्या?

हरियाणा सरकार व स्टाफ सिलेक्शन कमीशन एक बार फिर बच्चों की ज़िंदगी को अंधकार में धकेल रहे हैं। 04 साल से हरियाणा के युवा हज़ारों करोड़ रुपया खर्च के सेट के जंजाल में धक्के खा रहे हैं और खट्टर सरकार हर रोज़ मनमाने ढंग से मापदंड बदल व भयंकर ग़लतियाँ कर उनकी ज़िंदगियों को लूट रही है। सेट का रिजल्ट ठीक किए बग़ैर एक और पेपर करवाने की बेवकूफाना हड़बड़ी व जल्दबाज़ी क्यों? किस साज़िश के तहत युवाओं के भविष्य को अंधकार में धकेला जा रहा है? खामियाँ, त्रुटियां दूर करके भर्ती पेपर लिया जा सकता है ले. किन ऐसा क्यों नहीं किया जा रहा है? चार साल धक्के खाकर के सेट पास करने का क्या अर्थ रह गया है? इन्होंने जितने ब्लंडर इस भर्ती में किए हैं उनके कारण अगले 10 साल भी मामले न्यायालयों में लटके रहेंगे। जो बच्चे नौकरी लगेंगे उनको भी ये सरकार चैन से सोने नहीं देगी तथा जो नहीं लग पाएंगे उनका तो भविष्य चौपट कर ही दिया है। पेपर स्टे होने के बावजूद आनन–फानन में पेपर करवाए गए और एक पेपर के दूसरे पेपर में पचास प्रतिशत हूबहू सवाल पूछ लिए। हद हो गई है? क्या पेपर भी नहीं बनवा सकते हैं? बनवा तो सकते हैं परंतु बनवाने नहीं, क्योंकि अगर पेपर सही से बनवा दिए तो हरियाणा के बेरोजगार युवाओं को कैसे मानसिक तौर से परेशान करेंगे, पता न हरियाणा सरकार क्युं ऑख बन्द किये बैठी है।

हरियाणा सरकार द्वारा सरकारी भर्ती के रोज़ बदलते मापदंडों व कॉमन एलिजिबिलिटी टेस्ट की ग़लतियों ने युवाओं की ज़िंदगी बर्बाद कर दी है। आज हरियाणा स्टाफ सिलेक्शन कमीशन के रोज़ बदलते 'तुगलकी फ़रमान' ने हरियाणा के नौजवानों की ज़िंदगी को बर्बादी की कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। कॉमन एलिजिबिलिटी टेस्ट की परीक्षा के चार साल से चल रहे खेल के "मनोहर जाल" ने हरियाणा के बच्चों की ज़िंदगी को बदहाल बना दिया है। हरियाणा के युवाओं से आये–दिन नौकरी के नाम पर हो रहे मज़ाक़ ने युवाओं की रोज़गार पाने की हर उम्मीद को ध. राशायी कर दिया है। इसके लिए सीधे–सीधे वर्तमान सरकार ज़िम्मेदार हैं। सच्चाई यह है कि हरियाणा सरकार व स्टाफ सिलेक्शन कमीशन एक बार फिर बच्चों की ज़िंदगी को अंधकार में धकेल रहे हैं। 04 साल से हरियाणा के युवा हज़ारों करोड़ रुपया खर्च के सेट के जंजाल में धक्के खा रहे हैं और खट्टर सरकार हर रोज़ मनमाने ढंग से मापदंड बदल व भयंकर ग़लतियाँ कर उनकी ज़िंदगियों को लूट रही है। सेट का रिजल्ट ठीक किए बग़ैर एक और पेपर करवाने की बेवकूफाना हड़बड़ी व जल्दबाज़ी क्यों? किस साज़िश के तहत युवाओं के भविष्य को अंधकार में धकेला जा रहा है? खामियाँ, त्रुटियां दूर करके भर्ती पेपर लिया जा सकता है, लेकिन ऐसा क्यों नहीं किया जा रहा है? जब अगले पेपर में बैठने का आधार ही सेट स्कोर है, तो इस स्कोर को ठीक क्यों नहीं किया जा रहा है? यदि कल को यह क्लेम किसी का गलत मिलता है, डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन के समय सैकड़ों ऐसे केस सामने आएंगे, तब उनकी उम्मीदवारी तो आप रद्द कर देंगे, लेकिन उनकी जगह पर जो सही कैंडिडेट पेपर दे सकते थे, उनके साथ तो घोर अन्याय हो जाएगा। 35000 बच्चों की ज़िन्दगियों, उनके करियर, उनके भविष्य का सवाल है, जो 4 साल से इंतज़ार कर रहे हैं। जिन्होंने सोशो–इकोनॉमिक के अंक छोड़े हैं उन्हें अभी भी वे अंक दिए हुए दर्शाये गए हैं। हरियाणा से बाहर के अभ्यर्थियों के ये क्लेम कैसे जांचेंगे? जिनका सेट स्कोर कम है, उन्हें पेपर में बैठने का मौका दिया जा रहा है, जिनके ज़्यादा हैं वे बाहर हैं, ऐसा क्यों? तनाव भरे माहौल के बावजूद पेपर लेने की जल्दी क्या है? हाई कोर्ट के सिंगल बेंच से के सेट नतीजा ख़ारिज होने के बावजूद रातों रात हाई कोर्ट के डबल बेंच में जाकर दरवाज़ा खटखटाने व 24 घंटे में ही पेपर लेने की ज़िद क्यों की गयी? सेट रिजल्ट ख़ारिज होने व 05 तथा 06 अगस्त, 2023 को होने वाला पेपर स्टे होने के बावजूद आनन–फानन में पेपर करवाए गए और एक पेपर के दूसरे पेपर में पचास प्रतिशत हूबहू सवाल पूछ लिए। हद हो गई है? क्या पेपर भी नहीं बनवा सकते हैं, बनवा तो सकते हैं परंतु बनव. ाने नहीं क्योंकि अगर पेपर सही से बनवा दिए तो हरियाणा के बेरोजगार युवाओं को कैसे मानसिक तौर से परेशान करेंगे, पता न हरियाणा सरकार क्युं ऑख बन्द किये बैठी है।

इतना बड़ा पेपर है, 4 साल का इंतज़ार, ऐसे कमीशन से रिजल्ट बनाने में त्रुटियां होंगी या ये जानबूझकर करेंगे। क्या यह सीधे–सीधे पेपर सॉल्वर गैंग को हेराफेरी का न्योता नहीं। इस जल्दी का कारण क्या है? जब सेट का रिवाइज़्ड रिजल्ट पूरी तरह से ग़लत है, तो पेपर लेने का औचित्य ही क्या है? इन सबको भी कोर्ट में चुनौती दी जाएगी, तो फिर नौकरियाँ कैसे लगेंगी। जब सेट पास 3,59,000 उम्मीदवारों में से 3,29, 000 उम्मीदवार एग्जाम में बैठ ही नहीं पायेंगे, तो फिर सेट की प्रक्रिया के क्या मायने बचे हैं। हरियाणा स्टाफ सिले. क्शन कमीशन ने ग्रुप 56 के लिए कट ऑफ नंबर 65 निर्धारित किए हैं तथा ग्रुप 57 के लिए कट ऑफ नंबर 67 निर्धारित किए हैं। पोस्ट से चार गुना उम्मीदवार बुलाने का मतलब है कि लगभग 30,000 बच्चों को रिटन एग्जाम के लिये बुलाया जाएगा। ग्रुप 57 के सभी उम्मीदवार ग्रुप 56 में भी एलिजिबल होंगे। यानि दोनों ग्रुप्स में 90þ उम्मीदवार वही होंगे। ऐसे में सेट पास हुए 3,59,000 उम्मीदवारों में से 3,29,000 को रिटन एग्जाम में बैठने का मौक़ा ही नहीं मिलेगा। तो फिर चार साल धक्के खाकर के सेट पास करने का क्या अर्थ रह गया है? इन्होंने जितने ब्लंडर इस भर्ती में किए हैं उनके कारण अगले 10 साल भी मामले न्यायालयों में लटके रहेंगे। जो बच्चे नौकरी लगेंगे उनको भी ये सरकार चैन से सोने नहीं देगी तथा जो नहीं लग पाएंगे उनका तो भविष्य चौपट कर ही दिया है।

बिदामो सुरेश नांदवाल
थ्हसार, हरियाणा

मणिपुर पर पूरे देश और विदेशों की निगाहें

अनेक प्रयासों के बावजूद मणिपुर में हिंसा की घ ाटनाओं का जारी रहना गंभीर चिंता की बात है। विष्णुपुर जिले में गत शुक्रवार को देर रात उग्रवादियों ने पिता–पुत्र सहित तीन लोगों की हत्या कर दी। घटना के बाद क्रुद्ध भीड़ ने कई घरों को फूंक दिया। जिले में सुर क्षा बलों और सशस्त्र लोगों के बीच गोलीबारी भी हुई, जिसमें तीन लोग घायल हो गये। पुलिस का कहना है कि जिले के क्वाक्टा में तीन लोगों की सोते समय गोलियां मारी गयी और शवों को तलवार से काट दिया गया। जिन तीन लोगों की हत्या की गई। वे राहत शिविर में रह रहे थे और स्थिति में सुधार के बाद अपने घर लौटे थे। विष्णुपुर में हालात एकदम बदतर हैं। मणिपुर में जिस तरह से हिंसा की घटनाएं हो रही हैं उसके पीछे ऐसे लोगों का हाथ है, जो सुनियोजित ढंग से हिंसा की घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। मणिपुर में तीन महीने पहले शुरू हुई हिंसा को काबू में करने के लिए चालीस हजार से अधिक सुरक्षाकर्मी लगाए जा चुके हैं। इनमें सेना से लेकर असम राइफल्स, बीएसएफ, सीआरपीएफ, एसएसबी और आईटीबीसी के जवान और अधिकारी शामिल हैं। मणिपुरकी कुल आबादी लगभग तीस लाख है। औसतन 75 लोगों पर एक सुरक्षाकर्मी हैं। इसके बावजूद हिंसा रुकने का नाम नहीं ले रही है। पिछले दो–तीन दिनों के दौरान नये सिरे से भड़की हिंसा में छह लोगों की मौतें हो चुकी हैं। विष्णुपुर के क्वाक्टा क्षेत्र में जिन तीन लोगों की हत्या हुई है, वे मैतेई समुदाय के बताए जा रहे हैं, जिन्हें बर्बर तरीके से मारा गया है। मैतेई और कूकी समुदाय एक–दूसरे के विरुद्ध हिंसक गतिविधियों को अंजाम दे रहे हैं। वहां की राज्य सरकार और उसका प्रशासनिक तंत्र इसे रोकने में पूरी तरह से विफल रहा। कूकी और मैतेई समुदाय के बीच जारी हिंसा का पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों पर भी प्रभाव पड़ रहा है।

विशेषज्ञों के अनुसार मणिपुर के हालात खराब होने के पीछे विदेशी ताकतों की भी भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता है। हिंसा करने वाले बंदूकों और मोर्टार से एक दूसरे पर हमला कर रहे हैं। ऐसे हथियार पुलिस मुख्यालयों से लूटे गए हैं और दूसरे देश से भी हथियार मणिपुर पहुंच रहे हैं। मणिपुर पर पूरे देश और विदेशों की भी निगाहें हैं। संसद में भी मणिपुर के मुद्दों पर शोर शराबे और हंगामे की स्थिति बनी हुई है। गत सोमवार को सत्ता और विपक्ष को बीच का रास्ता निकालकर चर्चा करने की आवश्यता बनती है। मणिपुर के मुद्दे पर पर सही सोच के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। केन्द्र सरकार को भी अब और कड़े कदम उठाने की जरूरत है क्योंकि मणिपुर में हिंसा की घटनाओं पर अंकुश लगाना अत्यन्त ही आवश्यक हो गया है।

ऐसे कई उदाहरण हैं जहां विकास कार्यक्रमों और दृ ष्टिकोणों से हिंसा का मुकाबला करने में सकारात्मक परिणाम मिले हैं। "राजस्थान मदरसा बोर्ड" पहल राज्य में पारंपरिक इस्लामी स्कूलों (मदरसों) के आधुनिकीकरण पर केंद्रित है। धार्मिक अध्ययन के साथ–साथ पाठ्यक्रम में विज्ञान, गणित और अंग्रेजी जैसे विषयों को शामिल करके, इसने छात्रों को अधिक सर्वांगीण शिक्षा प्रदान की। परिणामस्वरूप, छात्र चरमपंथी विचारधाराओं के प्रति कम संवेदनशील हो गए। आंध्र प्रदेश में "सद्भावना" परियोजना का उद्देश्य विविध समुदायों के बीच सामाजिक एकता को बढ़ावा देना है। इसने विभिन्न धार्मिक पृष्ठभूमि के लोगों को सामुदायिक कार्यक्रमों, खेलों और सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए एक साथ लाया। इससे समझ बढ़ी, अविश्वास कम हुआ और समुदायों के बीच मजबूत संबंध बनाने में मदद मिली। "उड़ान" कार्यक्रम कश्मीर घाटी में युवाओं को कौशल विकास और नौकरी प्रशिक्षण प्रदान करने पर केंद्रित है। उनकी रोजगार क्षमता को बढ़ाकर और आर्थिक अवसर प्रदान करके, इसका उद्देश्य युवाओं में अलगाव और निराशा की भावनाओं का मुकाबला करना है, जिससे उन्हें कट्टरपंथ के प्रति कम संवेदनशील बनाया जा सके।

संवेदनशील क्षेत्रों में हिंसा का मुकाबला।

भारत के संवेदनशील क्षेत्रों में हिंसा का मुकाबला करने के लिए एक व्यापक और बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। मूल कारणों को संबोधित करके, स्थानीय समुदायों को शामिल करके और शिक्षा और आर्थिक विकास में निवेश करके, इन कार्यक्रमों का उद्देश्य सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देना और चरमपंथी आख्यानों का विरोध करना है। यह परिचय प्रभावी विकास पहल के लिए मंच तैयार करता है जो व्यक्तियों को सशक्त बनाता है, सहिष्णुता को बढ़ावा देता है और हिंसा के प्रसार के खिलाफ एक लचीले समाज का निर्माण करता है। भारत के कमजोर क्षेत्रों में हिंसा का मुकाबला करने के लिए प्रभावी विकास कार्यक्रमों को डिजाइन करने और लागू करने के लिए एक व्यापक और बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

प्रत्येक क्षेत्र में हिंसा में योगदान देने वाले अंतर्निहित कारकों को समझना महत्वपूर्ण है। आर्थिक असमानताएं, सामाजिक बहिष्कार, शिक्षा की कमी और राजनीतिक हाशिए पर होना जैसे कारक अक्सर भूमिका निभाते हैं। कार्यक्रमों के डिजाइन और कार्यान्वयन में स्थानीय समुदायों को शामिल करें। प्रासंगिकता और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए उनकी अंतर्दृष्टि और सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल विकास के अवसरों तक पहुंच में सुधार पर ध्यान दें। शिक्षा व्यक्तियों को सूचित विकल्प चुनने और चरमपंथी विचारधाराओं का विरोध करने के लिए सशक्त बना सकती है। बुनियादी ढांचे, उद्योगों और रोजगार सृजन में निवेश करके समावेशी आर्थिक विकास को बढ़ावा, आर्थिक अवसर निराशा और हताशा की भावनाओं को कम करने में मदद कर सकते हैं जिनका चरमपंथी फायदा उठा सकते हैं। समझ और सहिष्णुता को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न धार्मिक, जातीय और सामाजिक समूहों के बीच संवाद और बातचीत को प्रोत्साहित करें। सामाजिक एकजुटता का निर्माण विभाजन को पाटने और चरमपंथी कथाओं की अपील को कम करने में मदद कर सकता है। संघर्षों और शिकायतों का निष्पक्ष और त्वरित समाधान सुनिश्चित करने के लिए कानून प्रवर्तन और न्याय प्रणालियों को मजबूत करें। संस्थानों में विश्वास कायम करने के लिए न्याय की भावना आवश्यक है। चरमपंथी विचारधाराओं और प्रचार को चुनौती देने वाली प्रति–कथाओं का विकास और प्रसार करें। मीडिया, स्थानीय प्रभावशाली लोग और धार्मिक नेता इस प्रयास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। चरमपंथी प्रभावों से ध्यान हटाने और उन्हें अपनेपन की भावना प्रदान करने के लिए सकारात्मक गतिविधियों, खेल, कला और संस्कृति के माध्यम से युवाओं को शामिल करें। आवश्यक समायोजन और सुधार करने के लिए विकास कार्यक्रमों की प्रभावशीलता की लगातार निगरानी और मूल्यांकन करें, संसाधनों और विशेषज्ञता को प्रभावी ढंग से एकत्रित करने के लिए विभिन्न सरकारी एजेंसियों, गैर सरकारी संगठनों और अंतरराष्ट्रीय भागीदारों के बीच समन्वय सुनिश्चित करें।

ऐसे कई उदाहरण हैं जहां विकास कार्यक्रमों और दृ ष्टिकोणों से हिंसा का मुकाबला करने में सकारात्मक परिणाम मिले हैं। "राजस्थान मदरसा बोर्ड" पहल राज्य में पारंपरिक इस्लामी स्कूलों (मदरसों) के आधुनिकीकरण पर केंद्रित है। धार्मिक अध्ययन के साथ–साथ पाठ्यक्रम में विज्ञान, गणित और अंग्रेजी जैसे विषयों को शामिल करके, इसने छात्रों को अधिक सर्वांगीण शिक्षा प्रदान की। परिणामस्वरूप, छात्र चरमपंथी विचारधाराओं के प्रति कम संवेदनशील हो गए। आंध्र प्रदेश में "सद्भावना" परियोजना का उद्देश्य विविध समुदायों के बीच सामाजिक एकता को बढ़ावा देना है। इसने विभिन्न धार्मिक पृष्ठभूमि के लोगों को सामुदायिक कार्यक्रमों, खेलों और सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए एक साथ लाया। इससे समझ बढ़ी, अविश्वास कम हुआ और समुदायों के बीच मजबूत संबंध बनाने में मदद मिली। "उड़ान" कार्यक्रम कश्मीर घाटी में युवाओं को कौशल विकास और नौकरी प्रशिक्षण प्रदान करने पर केंद्रित है। उनकी रोजगार क्षमता को बढ़ाकर और आर्थिक अवसर प्रदान करके, इसका उद्देश्य युवाओं में अलगाव और निराशा की भावनाओं का मुकाबला करना है, जिससे उन्हें कट्टरपंथ के प्रति कम संवेदनशील बनाया जा सके। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में "सड़क कनेक्टिविटी परियोजना" जैसी विकास योजनाओं का उद्देश्य सड़कें बनाना और कनेक्टिविटी में सुधार करना है। इन परियोजनाओं ने न केवल पहुंच बढ़ाई बल्कि पृथक क्षेत्रों में आर्थिक लाभ भी पहुंचाया, जिससे चरमपंथी समूहों का प्रभाव कम हुआ। असम में "गुणोत्सव" कार्यक्रम सरकारी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार पर केंद्रित है। सीखने के माहौल और शिक्षक प्रशिक्षण को बढ़ाकर, इसने बच्चों के लिए शैक्षिक अवसरों में सुधार किया, जिससे वे चरमपंथी प्रभावों के प्रति कम संवेदनशील हो गए। केरल जैसे कुछ राज्यों ने कट्टरपंथ उन्मूलन कार्यक्रम लागू किए हैं जो चरमपंथी विचारधारा से प्रभावित व्यक्तियों के पुनर्वास पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ये पहलें परामर्श, व्यावसायिक प्रशिक्षण और पुर्नएकीकरण सहायता प्रदान करती हैं, जिससे व्यक्तियों को समाज में पुनः एकीकृत होने में मदद मिलती है। हिंसा का मुकाबला करने में विकास कार्यक्रमों की सफलता उनकी अनुकूलनशीलता, सामुदायिक भागीदारी और निरंतर मूल्यांकन में निहित है। अंतर्निहित कारकों को संबोधित करके, सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देकर, और शिक्षा और आर्थिक विकास के अवसर प्रदान करके, ये पहल भारत के कमजोर क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती हैं। साथ में, ये प्रयास अधिक समावेशी, सहिष्णु और लचीले समाज के निर्माण में योगदान करते हैं, अंततः हिंसा के प्रभाव को कम करते हैं और स्थायी सकारात्मक बदलाव को बढ़ावा देते हैं।

डॉ. सत्यवान सौरभ,

मज़हबी नफ़रत किसी भी मुल्क़ की एकता के लिए ख़तरनाक

नई दिल्ली। दिल्ली स्थित जामा मस्जिद के शाही इमाम सैयद अहमद बुखारी ने सांप्रदायिक हिंसा की हालिया घटनाओं की पृष्ठभूमि में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से 'मुसलमानों के मन की बात सुनने' की गुज़ारिश करते हुए शुक्रवार को कहा कि मणिपुर और हरियाणा के मेवात की घटनाएं 'मादर–ए–वतन' के भविष्य पर सवालिया निशान लगाती हैं। बुखारी ने मोदी से गुजारिश करते हुए कहा, " माननीय प्रधानमंत्री आप 'मन की बात' करते हैं, मुसलमानों के मन की बात भी सुनिए। वो इन हालात से परेशान हैं, वो सोच रहे हैं कि मुल्क का क्या भविष्य होगा? मुसलमान ही नहीं हिंदू, ईसाई और सिख भी यही सोच रहे हैं।" सरकार के साथ बातचीत का समर्थन करते हुए बुखारी ने कहा, " मैं हिंदुस्तान के मुसलमानों की ओर से कह रहा हूं कि हम सरकार के साथ बातचीत के लिए तैयार हैं। हम से बात कीजिए, हिंदू नेताओं से भी बात कीजिए और फिर एक संयुक्त बैठक कीजिए। इन हालात का हल तलाश कीजिए ताकि नफरत के इस माहौल से मुल्क को बचाया जा सके।" जुमे की नमाज़ से पहले जामा मस्जिद में अपने संबोधन में बुखारी ने गृह मंत्री अमित शाह से भी 'दिल बड़ा' कर मुस्लिम समुदाय के प्रतिनिधियों से बात करने का आग्रह किया।

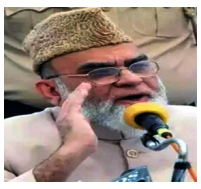

उन्होंने आरोप लगाया कि नफरत का माहौल देश को अपनी चपेट में ले रहा है और यह बुहसंख्यक समाज के 'धर्मनिरपेक्ष लोग' भी महसूस कर रहे हैं। बुखारी ने मेवात की स्थिति पर कहा कि मुल्क में हिन्दू –मुसलमान साथ रहते हैं लेकिन कुछ लोग 'पंचायतें कर मुसलमानों का आर्थिक बहिष्कार करने की अपील कर रहे हैं और उन्हें 'धमकियां' दे रहे हैं। उन्होंने दावा किया कि चुनाव की वजह से माहौल बनाया जा रहा है ताकि ध्रुवीकरण हो और वोट एकतरफा तौर पर एक पार्टी के प क्ष में पड़ें। बुखारी ने किसी पार्टी का नाम लिए बिना कहा कि देश पर किसी भी पार्टी की हुकूमत सदा नहीं रही । हुकूमतें आती जाती रहती हैं । उन्होंने कहा कि पार्टियों को जनता का दिल जीत कर और काम के आधार पर चुनाव लड़ना चाहिए। उन्होंने कहा, " हालिया दर्दनाक वाकियात (घटनाओं) ने 'मादर–ए–वतन' के भविष्य पर सवालिया निशान लगा दिया है। फिर चाहे मणिपुर का वाक्या हो, ट्रेन में बेगुनाहों का कत्ल हो या हरियाणा के मेवात में होने वाली घटनाएं हों।'' उन्होंने साथ ही दावा किया कि सरकार चाहे तो इन हालात को काबू कर नफरत को खत्म कर सकती है। बुखारी ने साथ ही आरोप लगाया कि बिना किसी कानूनी प्रक्रिया का पालन और जांच किए बिना 'मेवात के मुसलमानों को बेघर कर दिया गया।'

विश्व हिंदू परिषद (विहिप) की 31 जुलाई की जलाभिषेक यात्रा को निश. ाना बनाए जाने के कुछ दिनों बाद नूंह में कई घरों और अन्य इमारतों पर बुलडोजर चला दिया गया था। नूंह हिंसा में होम गार्ड के दो जवान सहित पांच लोग मारे गए थे और बाद में हिंसा निकटवर्ती गुरुग्राम तक फैल गई थी, जहां एक मस्जिद पर हमले में एक इमाम की हत्या कर दी गई। बु खारी ने यह भी कहा कि वह मेवात की घटनाओं का समर्थन नहीं कर रहे हैं क्योंकि 'बेटा किसी का भी मरे', आंसू मां की आंख में आते हैं और आंसू हिंदू– मुसलमान में फर्क नहीं करते । बुखारी ने प्रधानमंत्री से पुनः अपील करते हुए कहा, " एकता ही मुल्क को मजबूत कर सकती है ले. किन यह नफरत मुल्क को कहां लेकर जाएगी, इसका अंदाज़ा शायद आपको न हो। प्रधानमंत्री जी हालात को समझिए और इस पर गौर कीजिए।" इमाम ने स्वीडन में कुरान जलाए जाने की घटना का जिक्र करते हुए दावा किया, " यह धर्म आधारित नफरत सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में इस्लाम और मुसलमानों के ि खलाफ फैलती जा रही है। यह मजहबी नफरत किसी भी मुल्क की एकता के लिए खतरनाक है।"

'प्रदेशवासियों को नशा मुक्त बनने का संकल्प लेना चाहिए'

लखनऊ। सीएम योगी ने अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस पर केडी सिंह बाबू स्टेडियम में आयोजित नशामुक्त प्रदेश–सशक्त प्रदेश अभियान का शुभारंभ किया। इस दौरान सीएम ने युवाओं से नशे से बचने की अपील की। सीएम योगी ने कहा कि प्रदेशवासियों को नशा मुक्त बनने का संकल्प लेना चाहिए। नशा जवानी को समाप्त करने का कारण है। जवानी में देश, समाज व अपने सपनों को बुनना चाहिए, नाकि नशे के चक्कर में शरीर को खराब करना चाहिए। सीएम ने कहा कि नशा करने वाले व्यक्ति का शरीर खराब हो जाता है। वह कोई भी कार्य सही से नहीं कर पाता. इसलिए हमे नशा करने के बजाए अपने शरीर को फिट रखने पर ध्यान देना चाहिए। ताकि हम अपने देश व प्रदेश की प्रगति के बारे में सोच सकें. सीएम ने मंच से केंद्रीय मंत्री कौशल किशोर के भाषण का भी जिक्र किया। सीएम ने कहा कि केंद्रीय मंत्री कौशल किशोर का पुत्र गलत संगति में पड़कर नशे का आदी हो गया। जिसके बाद उसे अपनी जान गंवानी पड़ी। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में जागरूकता कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस अभियान के साथ सभी को जुड़ना है। सीएम ने कहा कि हमारी सरकार युवाओं के लिए कई कल्याणकारी योजनाएं चला रही है। 2 करोड़ युवाओं को टैबलेट बांटे गए हैं ताकि युवाओं को तकनीकि से जोड़ा जा सके। इस अवसर पर सीएम योगी के साथ मंच पर डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक व केंद्रीय मंत्री कौशल किशोर भी मौजूद रहे।

भाजपा की महिला मोर्चा द्वारा आयोजित लहरिया उत्सव के दौरान जयपुर में सांसद दीया कुमारी व अन्य।

सीमा सचिन की मूवी का ऑडिशन शुरू

पाकिस्तानी सीमा हैदर और सचिन की लव स्टोरी पर फिल्म बन रही है। फिल्म का नाम 'कराची टू नोएडा' रखा गया है। अब इसके लिए ऑडिशन भी शुरू हो गए हैं। ऑडिशन के लिए देशभर से एक्ट्रेसेस और मॉडल पहुंच रहे हैं। फिल्म के ऑडिशन की कई क्लिप वायरल हुई हैं। इसमें एक्ट्रेसेस और मॉडल डायलॉग बोलते दिखाई दे रहे हैं।

एक डायलॉग कुछ यूं है, ''मैंने तुमसे सच्चा प्यार किया है सचिन, ये सरहद और मजहब की दीवारें हमें अलग नहीं कर सकतीं।'' इस पर सचिन बना एक्टर जवाब देता है, ''मैं तुम्हारा साथ दूंगा...जय श्रीराम।'' फोन कॉल पर हो रही बातों के ऑडिशन के इस रिप्लाई में सीमा बनी एक्ट्रेस भी उसे जय श्रीराम कहती है। सीमा–सचिन पर बन रही फिल्म का पोस्टर जानी फायरफॉक्स प्रोडक्शन हाउस ने जारी किया है।

2024 में रिलीज होगी फिल्म

फिल्म के पोस्टर में भारत और पाकिस्तान के तिरंगे के साथ सीमा हैदर उसके चार बच्चों के साथ सचिन को शैडो में दि खाया गया है। पोस्टर में रिलीज की तारीख में लिखा गया है कि यह थिएटर में 2024 को आएगी। अमित जानी इस फिल्म के प्रोड्यूसर होंगे। भरत सिंह द्वारा फिल्म बड़े पर्दे पर लाई जाएगी।

बिल्कुल सीमा हैदर दिखी एक्ट्रेस

वायरल ऑडिशन क्लिप में एक एक्ट्रेस पूरी तरह सीमा हैदर के लुक में दिखाई दी।

कराची के कपड़ों में सीमा जैसी कद काठी में एक्ट्रेस ऑडिशन देते समय सचिन से बात कर रही थी। इसमें एक्ट्रेस ने डायलॉग भी बोले हैं। बताया जा रहा है कि यह ऑडिशन नोएडा फिल्म सिटी सेक्टर–16 स्थित एक स्टूडियो में बुधवार को शूट किया गया।

फिल्म निर्माता ने नोएडा पुलिस से की शिकायत

पाकिस्तान से आई सीमा हैदर और नोएडा के सचिन की लवस्टोरी पर आधारित फिल्म बनाने का निर्णय लेने वाले निर्माता अमित जानी को जान से मारने की धमकी मिली है। अमित जानी ने मेरठ और नोएडा पुलिस से शिकायत की है।

रविवार को फिल्म निर्माता अमित जानी ने आरोप लगाया कि मोनू मानेसर के नाम से एक वॉट्सऐप कॉल पर उन्हें धमकी दी गई है। उनसे कहा गया है कि अगर तुमने सीमा हैदर को अपनी फिल्म में काम दिया तो मार दिए जाओगे। अमित जानी ने आरोप लगाते हुए यह भी कहा कि सपा नेता अभिषेक सोम ने उनके प्रोडक्शन में बनाई जा रही फिल्म 'ए ट्रेलर मर्डर स्टोरी' का विरोध किया है।

आजादी की अंतिम लड़ाई के शंखनाद का दिन 9 अगस्त

मणिपुर में मेइती समुदाय महिलाओं के समूह मीरा पैबिस (मशालवाहक महिलाएँ) की महिलाओं ने गलत सोमवार को इंफाल की घाटी में असम राइफल्स के खिलाफ प्रदर्शन किया प्रदर्शन के दौरान हिंसा प्रभावित क्षेत्रों से असम राइफल्स के कर्मियों को हटाए जाने की मांग की।

9 अगस्त, 1942 के दिन अरुणा आसफ अली ने मुम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान में तिरंगा फहराकर भारत छोड़ो आंदोलन का बिगुल फूंका था। मुम्बई के जिस पार्क से यह आंदोलन शुरू हुआ उसे अब अगस्त क्रांति मैदान के नाम से जाना जाता है। ' अगस्त क्रांति' या 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' को हम भारतीय स्वाधीनता का द्वितीय मुक्ति संग्राम कह सकते हैं। जिसके फलस्वरूप 5 वर्ष बाद 1947 में हमें आजादी मिली। पं. जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में, 'यह किसी पार्टी या व्यक्ति का आंदोलन न होकर आम जनता का आंदोलन था, जिसका नेतृत्व आम जनता द्वारा ले लिया गया था।' दूसरे विश्वयुद्ध में भारत से सहायता लेने के बाद भी जब अंग्रेजों ने भारत को आजाद करने का अपना वादा नहीं निभाया तो गांधी जी ने 'भारत छोड़ो आंदोलन' की शुरुआत की। 8 अगस्त को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस समिति के बम्बई सत्र में इस आंदोलन का प्रस्ताव पारित किया गया। मगर तभी गांधी जी को पुणे की आगा खां पैलेस में कैद कर लिया गया और लगभग सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। हर साल देश में इस दिन को अगस्त क्रान्ति दिवस के रूप में मनाया जाता है, जिसमें स्वाधीनता संग्राम में अपने प्राणों की आहूति देने वाले क्रांतिकारियों को श्रद्धांजलि दी जाती है। 1 सितंबर, 1939 को दूसरे महायुद्ध की घोषणा हो गई थी। ब्रिटिश सरकार ने बिना भारतीयों से पूछे भारत को युद्ध में झोंक दिया। इसकी प्रतिक्रिया में कांग्रेस ने प्रांतीय मंत्रिमंडलों से इस्तीफ़ा दे दिया। नारा दिया गया– न एक पाई, न एक भाई।

ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों का समर्थन पाने के लिए 23 मार्च, 1942 सर स्टीफर्ड क्रिप्स को भारत भेजा। क्रिप्स मिशन ने युद्ध के बाद भारत में औपनिवेशक स्वराज की स्थापना करने, संविधान सभा बनाने और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा आदि से जुड़ी योजनाएं पेश कीं। लेकिन प्रमुख दलों ने इसे मानने से इंकार कर दिया। युद्ध की स्थिति में अंग्रेज़ों पर चोट की जाए या नहीं, इसे लेकर कांग्रेस नेताओं में मतभेद था। लेकिन महात्मा गांधी इस अवसर पर निर्णायक चोट करने के पक्ष में थे। 8 अगस्त, 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में प्रसिद्ध 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पारित हुआ। प्रस्ताव में अहिंसक रूप से जितना संभव हो, उतने बड़े स्तर पर जन संघर्ष का आह्वान किया गया था। उसी दिन अपने भावपूर्ण 'करो या मरो' का आह्वान करने वाले भाषण में गांधी जी ने यह घोषणा की कि यदि आम हड़ताल करना आवश्यक हो तो मैं उससे पीछे नहीं हटूंगा। गांधी जी पहली बार राजनीतिक हड़तालों का समर्थन करने के लिए तैयार हुए थे। 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव में यह भी कहा गया था कि अगर कांग्रेस के सभी नेता गिरफ्तार हो जाएं तो स्वाधीनता की इच्छा एवं प्रयास करने वाला प्रत्येक भारतीय स्वयं अपना मार्गदर्शक बने। प्रत्येक भारतीय अपने आपको स्वाधीन समझे, केवल जेल जाने से ही काम नहीं चलेगा।

9 अगस्त को नेताओं की गिरफ्तारी के साथ ही आंदोलन देशव्यापी होने लगा। शुरुआत में शहरों में श्रमिकों की हड़तालें हुईं, नौजवान और छात्रों ने उग्र प्रदर्शन किया और जल्दी ही यह ग्रामीण अंचलों में फैल गया। अहिंसा वाले आंदा. लन ने अब हिंसा का रूप ले लिया था। उसने अपने आक्रोश से अंग्रेजी सरकार की कमर तोड़कर रख दी थी। लेकिन गांधी जी इन सबसे खुश नहीं थे क्योंकि वो अहिंसावादी थे। 6 मई, 1944 को गांधी जी को रिहा कर दिया गया। भले ही इसमें ब्रिटेन जीत गया हो लेकिन उसे फिर भी भारत को आजाद करना पड़ा और वापस जाना पड़ा। आज जिस भारत में हम खुलकर सांस ले रहे हैं उसे हमारे पूर्वजों ने अपने खून–पसीने से आजाद करवाया है।

पावस के सवैया

(1)
मन को तन को,नव जीवन दे,बरसात बहार सुहावन है।
जब नीर हमें सबको सुख दे,तब गीत जगे मनभावन है।
बरसे बदरा हम भीग गए,पर नीर सदा अति पावन है।
सुख की बगिया मन फूल खिलें,बरसे सँग नेह सुसावन है।

(2)
मन भीग गया,तन भीग गया,अब गीत जगा,यशगान नया।
बरसा बहकी,बरसा चहकी,हर एक कहे वरदान नया।
बिजली चमकी,बिजली दमकी,बरसे अब तो अहसान नया।
हमको तुमको,इनको उनको,भर दे,नव दे,अब प्रान नया।

(3)
हम जीत गए,हम प्रीत भए,अब तो हर ओर लुभावन है।
कितना सुखदा,हर ली विपदा,नव आस सजा यह सावन है।
अब रात गई,वह बात गई,नव रीति यहां अब आवन है।
बरसे बदरा,हर ओर बही,जल की रसधार सुहावन है ।

(4)
अब गीत लबों पर गूँज रहा,यह है महिमा अति मौसम की।
परदेश गए बलमा जिनके,उनको अब आग पले ग़म की।
नव माप लिए,नव ताप लिए,बदरा हर बात सदा दम की।
बदरा कितने,अनुराग भरे,बदरा कर बात सदा सम की।

(5)
बदरा हमको सुखधाम लगें,बदरा हमको वरदान लगें।
बदरा हमको बलवान लगें,बदरा हमको यशगान लगें।
बदरा हमको नव नीति लगें,हमको नित ही वह आन लगें।
बदरा हमको जल देकर के, हमको पावन अरमान लगें।

प्रो(डॉ)शरद नारायण खरे

डॉ संगीता शर्मा अपनी पुस्तक सदी की मह. ामारी कोरोना एवं मीडिया की प्रति जयपुर के राज भवन में राज्यपाल कल राज मिश्र को भेंट करते हुए।

अगस्त क्रांति की वर्षगांठ पर भाजपायों ने महात्मा गांधी को याद किया

युद्ध झेल लिया लेकिन झांसी को अंग्रेजों के हवाले नहीं किया

झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई का जन्म 19 नवम्बर 1835 ईव को ब्रिटिश भारत के वाराणसी के भदौनी में हुआ था। इनके बचपन का नाम मणिकर्णिका परन्तु प्यार से इन्हे मनु पुकारा जाता था। इनके पिता का नाम श्री मोरोपंत जोकि एक मराठा थे और पेशवा वाजीराव द्वितीय मराठा की सेवा में कार्यरत थे। इनकी माता का नाम भागीरथी बाई था। मनु की 4 वर्ष की अल्पायु में ही इनकी माता का देहांत हो गया। घर में अकेली होने के कारन इनके पिता इन्हें बाजीराव के दरवार में ले गए।

1842 ई. में मात्र सात वर्ष की अवस्था में इनका विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव निम्बालकर से कर दिया गया। अब ये झाँसी की रानी बन गयीं और इनका नया नाम लक्ष्मी बाई र खा गया। 1851 ईव में 16 वर्ष की अवस्था में इन्होने एक पुत्र को जन्म दिया जिसकी मृत्यु चार माह पश्चात ही हो गयी। 1953 ईव में राजा गंगाधर राव का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा तो उन्हें झाँसी के वारिस के रूप में किसी को गोद लेने की सलाह दी गयी जिसे गंगाधर राव ने मान ली और दामोदर राव को गोद ले लिया। इसके बाद 21 नवम्बर 1853 को गंगाधर राव की मृत्यु हो गयी।

झाँसी की रानी के विद्रोह का कारण (ब्रिटिश नीति)

गंगाधर राव की मृत्यु के बाद जनरल डॉयर ने दामोदर राव को गोद निषेध सिद्धांत (राज्य हड़प नीति) के आधार पर झाँसी का उत्तराधिकारी मानने से इन्कार कर दिया और 7 मार्च 1854 को झाँसी को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया। झाँसी की रानी को यह सहन न हुआ और उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया और कहा कि मै झाँसी को अंग्रेजो के हवाले नहीं करुँगी।

झाँसी का युद्ध

मनु को बचपन से ही शास्त्र, शस्त्र और घुड़सवारी की शिक्षा दी गयी थी।

जनवरी 1858 ईव को अंग्रेजों ने झाँसी पर चढ़ाई कर दी और चारों ओर से घेर लिया और मार्च 1858 में युद्ध शुरू कर दिया तब रानी लक्ष्मीबाई ने तात्या टोपे से मदद मांगी और तात्या टोपे 20 हजार की सेना के साथ अंग्रेजों से टक्कर लेने आ डटे परन्तु ये पराजित हो गए। दो सप्ताह की लड़ाई के बाद अंग्रेजो ने झाँसी पर कब्ज़ा कर लिया। लक्ष्मी बाई अपने घोड़े बादल पर सवार होकर भाग निकली परन्तु रास्ते में घोड़े की मृत्यु हो गयी और तब रानी ने कालपी में शरण ली और यहाँ इनकी मुलाकात तात्या टोपे से हुयी। अब अंग्रेजों ने कालपी पर भी आक्रमण कर दिया। इस बार फिर रानी को पराजय का मुँह देखना पड़ा और ग्वालियर की तरफ भागना पड़ा।

रानी लक्ष्मी बाई को 18 जून 1858 ईव को कोटा की सराय, ग्वालियर में 23 वर्ष की अवस्था में वीरगति प्राप्त हुयी। इनकी समाधि ग्वालियर के फूलबाग इलाके में बनी हुयी है।

एक दबंग शायर रहे फिराक गोरखपुरी

उर्दू भाषा के प्रसिद्ध रचनाकार है। उनका जन्म गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में कायस्थ परिवार में हुआ। इनका मूल नाम रघुपति सहाय था। रामकृष्ण की कहानियों से शुरुआत के बाद की शिक्षा अरबी, फारसी और अंग्रेजी में हुई। २६ जून, 1914 को उनका विवाह प्रसिद्ध जमींदार विन्देश्वरी प्रसाद की बेटी किशोरी देवी से हुआ। कला स्नातक में पूरे प्रदेश में चौथा स्थान पाने के बाद आई.सी.एस. में चुने गये। 1920 में नौकरी छोड़ दी तथा स्वराज्य आंदोलन में कूद पड़े तथा डेढ़ वर्ष की जेल की सजा भी काटी।। जेल से छूटने के बाद जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें अखिल भारतीय कांग्रेस के दफ्तर में अवर सचिव की जगह दिला दी। बाद में नेहरू जी के यूरोप चले जाने के बाद अवर सचिव का पद छोड़ दिया। फिर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में 1930 से लेकर 1959 तक अंग्रेजी के अध्यापक रहे। 1970 में उनकी उर्दू काव्यकृति 'गुले नग़्मा' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। फिराक जी इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में अध्यापक रहे। उन्होंने इलाहबाद विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की और उनकी नियुक्ति डिप्टी कलेक्टर के पद पर हो गयीं इसी बीच गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन छेड़ा तो फिराक उसमे सम्मिलित हो गये द्यनौकरी गयी और जेल की सजा मिली द्य कुछ दिनों तक वे आनन्दभवन , इलाहाबाद में पंडित नेहरु के सहायक के रूप में कांग्रेस का काम भी देखते रहे द्य बाद में उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के शिक्षक के रूप में काम किया द्य फिराक गोरखपुरी (थ्पतुं ळवतींचनतप) ने बड़ी मात्रा में रचनाये की द्य उनकी शायरी बड़ी उच्चकोटि की मानी जाती है द्य वे बड़े निर्भीक शायर थे । उनके कविता संग्रह "गुलेनगमा" पर 1960 में उन्हें साहित्य अकादमी पुरुस्कार का पुरुस्कार मिला और इसी रचना पर वे 1970 में भारतीय ज्ञानपीठ पुरुस्कार से सम्मा. नित किये गये द्य 3 मार्च 1982 में फिराक साहब का 85 वर्ष की उम्र में देहांत हो गया था द्य फिराक गोरखपुरी (थ्पतुं ळवतींचनतप) को उनके योगदान के लिए पद्मभूषण , जनपथ पुरुस्कार और साहित्य अकादमी पुरुस्कार से सम्मानित किया गया ं फिराक गोरखपुरी की शायरी में गुल–ए–नगमा, मश्अल, रूहे–कायनात, नग्म–ए–साज, गजालिस्तान, शेरिस्तान, शबनमिस्तान, रूप, धरती की करवट, गुलबाग, रम्ज व कायनात, चिरागां, शोअला व साज, हजार दास्तान, बज्मे जिन्दगी रंगे शायरी के साथ हिंडोला, जुगनू, नकूश, आधीरात, पर छाइयाँ और तरान–ए–इश्क जैसी खूबसूरत नज्में और सत्यम् शिवम् सुन्दरम् जैसी रुबाइयों की रचना फिराक साहब ने की है।

उन्होंने एक उपन्यास साधु और कुटिया और कई कहानियाँ भी लिखी हैं। उर्दू, हिंदी और अंग्रेजी भाषा में दस गद्य कृतियां भी प्रकाशित हुई हैं।

ऐसे मैसूर का नाम पड़ा 'टाइगर'

टीपू सुल्तान ने अंग्रेजों के खिलाफ कई युद्ध लड़े, अपने राज्य की पूर्ण रूप से रक्षा की और चौथे एंग्लो–मैसूर युद्ध में लड़ते समय उनकी मृत्यु हो गई।

मैसूर के टाइगर नाम से प्रसिद्ध टीपू सुल्तान अंग्रेजों के खिलाफ युद्धों में अपनी बहादुरी के लिए जाने जाते हैं। मैसूर के सुल्तान हैदर अली के सबसे बड़े बेटे के रूप में, टीपू सुल्तान 1782 में अपने पिता की मृत्यु के बाद सिंहासन पर बैठे थे। शासक के रूप में, उन्होंने अपने प्रशासन में कई नई चीजों को लागू किया और लौह–आधारित मैसूरियन रॉकेट का भी विस्तार किया, जिसे दुनिया का पहला रॉकेट कहा जाता है। उनके पिता के फ्रांसीसी के साथ राजनायिक संबंध थे, जिसके कारण टीपू सुल्तान को फ्रांसीसी अधिकारियों से सैन्य प्रशिक्षण भी मिला था। शासक बनने के बाद, अंग्रेजों के खिलाफ उन्होंने फ्रांसीसी के साथ मिलकर अपने संघर्ष में पिता की नीति को जारी रखा।

इसलिए पड़ा मैसूर का टाइगर नाम

टीपू सुल्तान का एक नाम और है, उन्हें मैसूर के टाइगर के नाम से भी बुलाया जाता है। उन्होंने टाइगर को अपने शासन के प्रतीक के रूप में अपनाया था। इतिहास के अनुसार एक बार टीपू सुल्तान एक फ्रांसीसी मित्र के साथ जंगल में शिकार कर रहे थे, तब वहां बाघ उनके सामने आ गया था, उनकी बंदूक काम नहीं कर पाई और बाघ उनके ऊपर कूद गया और बंदूक जमीन पर गिर गयी। वह बिना डरे, कोशिश करके बंदूक तक पहुंचे, उसे उठाया और बाघ को मार गिराया। तबसे उन्हें मैसूर का टाइगर नाम से बुलाया जाने लगा।

खुशियां स्वतंत्रता दिवस की

स्वतंत्रता कि खुशियाँ को
मिलजुल कर मनाएं
राष्ट्रीय त्योहारों पर
तिरंगे को लहराए
आओ सब मिलके
जन गण मन गीत गाएं
हिन्दू मुस्लिम ,सिख ईसाई
आपस में सब भाई –भाई
भारत माता है
हम सब कि माई
अपना सम्मान तिरंगा का
मान बढ़ावे
फक्र से हम सब
शीश को ऊपर उठाएं
आओ सब मिलके
जन गण मन गीत गाए
बलिदानियों को पुष्प चढ़ाएँ
उनके सम्मुख शीश नवाएँ
दिलाई हमें अंग्रेजों से आजादी
दुनिया को हम ये बताएँ
आओ सब मिलकर
जन गण मन गीत गाए
देश के सीमा प्रहरी बन जाएँ
देश की रक्षा का दायित्व निभाएं
युवा पीढ़ी को ये मूल मंत्र समझाएँ
आओ सब मिलके
जन गण मन गीत गाएद्य

संजय वर्मा "दृष्टि
मनावर
जिला धार (म. प्र)

अनुच्छेद

केशर की क्यारियां
खिल उठी
महक बिखरी चारों ओर
दफ़न हो गई
बारूदी गंध से सनी
आबो हवा
बर्फ़ीले पहाड़
चीड़ देवदार भी खुश
कश्मीर निखरा
जो बिखरा था
आतंकी सायो से
बाशिन्दे किसी की शह पर
कुछ चलते
गलत राहो पर
अब हुए
दबाव से मुक्त
अनुच्छेद से खुश
लहराते तिरंगे के संग
राष्ट्रीय गीत
राष्ट्रीय पर्वो पर
जम्मू कश्मीर
लेह लद्दाख के संग
मिलकर गाएंगे
एकता ,भाईचारे का
ये संदेशा
दुनिया को बतायेंगे
अमन की दुनिया में
केशर की क्यारियां
फिर से सजायेंगे
रहवासी वापस
अपने छुटे घरों में
रहने जाएंगे।
संजय वर्मा'दृष्टि'
मनावर(धार)मप्र

आज़ादी का वंदन

गहन तिमिर में हम साहस के,दीप जलाते हैं।
आज़ादी के मधुर तराने,हम नित गाते हैं।।
चंद्रगुप्त की धरती है यह,वीर शिवा की आन है।
राणाओं की शौर्य धरा यह,पोरस का सम्मान है।
वतनपरस्ती तो गहना है,हृदय सजाते हैं।
आज़ादी के मधुर तराने,हम नित गाते हैं।।
शीश कटा,कुर्बानी देकर,जिनने वतन सजाया।
अपने हाथों से अपना ही,जिनने कफ़न सजाया।।
भारत माता की महिमा की,बात सुनाते हैं।
आज़ादी के मधुर तराने,हम नित गाते हैं।।
खून बहा,कुर्बानी देकर,जिनने फर्ज़ निभाया।
वतनपरस्ती का तो जज़्बा,जिनने भीतर पाया।।
हँस–हँसकर जो फाँसी झूले,वे नित भाते हैं।
आज़ादी के मधुर तराने,हम नित गाते हैं।।

सिसक रही थी माता जिस क्षण,तब जो आगे आए।
राजगुरू,सुखदेव,भगतसिंह,बिस्मिल वो कहलाए।।
ब्रिटिश हुकूमत से लोहा लेने,निज प्राण गँवाते हैं।
आज़ादी के मधुर तराने,हम नित गाते हैं।।
आज़ादी पाई जो हमने,उसको पोषित करना।
हर जन,नित सुख से रह पाए,सबका दुख है हरना।।
हर भारत के वासी में हम,देशभाव पाते हैं।
आज़ादी के मधुर तराने,हम नित गाते हैं।।
संविधान है मान हमारा,जन–जन का अरमान है।
भारत माँ का वंदन नित,जन–गण–मन का गान है।।
आर्यवर्त की पुण्यभूमि को,तीन रंग भाते हैं।
आज़ादी के मधुर तराने,हम नित गाते हैं।।

–प्रो(डॉ)शरद नारायण खरे

अच्छे वक्ता और कवि–सम्मेलनों के सफल गायक कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन'

समादृत कवि–लेखक शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म 5 अगस्त 1915 को उत्तर प्रदेश के उन्नाव ज़िले के झगरपुर गाँव में हुआ था। उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से अपना शोध कार्य पूरा किया। विक्रम विश्वविद्यालय के कुल. पति, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के उपाध्यक्ष, भारतीय विश्वविद्यालय संघ के अध्यश, कालिदास अकादेमी के कार्यकारी अध्यक्ष आदि के रूप में उन्होंने अपनी सेवा दी। प्रसिद्धनारायण चौबे के अनुसार, ''अदम्य साहस, ओज और तेजस्विता एक ओर, दूसरी ओर प्रेम, करुणा और रागमयता, तीसरी ओर प्रकृति का निर्मल दृश्यावलोकन, चौथी ओर दलित वर्ग की विकृति और व्यंग्यधर्मी स्वर यानी प्रगतिशील लता की प्रवृत्ति–शिवमंगल सिंह 'सुमन की कविताओं की यही मुख्य विशेषताएँ हैं।'' उनका प्रधान स्वर मानवतावादी था। शिल्प की दृष्टि से उनकी कविताओं में दुरुहता नहीं है, भाव अत्यंत सरल हैं। राजनीतिक कविताओं में व्यंग्य को लक्षित किया जा सकता है। वह अच्छे वक्ता और कवि–सम्मेलनों के सफल गायक कवि रहे।

उनका पहला कविता–संग्रह 'हिल्लोल' 1939 में प्रकाशित हुआ। उसके बाद 'जीवन के गान', 'युग का मोल', 'प्रलय–सृजन', 'विश्वास बढ़ता ही गया', 'पर आँखें नहीं भरीं', 'विंध्य–हिमालय', 'मिट्टी की बारात', 'वाणी की व्यथा', 'कटे अँगूठों की बंदनवारें' संग्रह आए। इसके अतिरिक्त, उन्होंने 'प्रकृति पुरुष कालिदास' नाटक, 'महादेवी की काव्य साधना' और 'गीति काव्यः उद्यम और विकास' समीक्षा ग्रंथ भी लिखे हैं। 'सुमन समग्र' में उनकी कृतियों को संकलित किया गया है। उन्हें 'मिट्टी की बारात' संग्रह के लिए 1974 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारत सरकार ने उन्हें 1974 में पद्मश्री और 1999 में पद्मभूषण से नवाज़ा।

यह कैसी है आजादी?

नारी घर से निकल नहीं सकती, शातिर भेड़िये ताक रहे।
उल्लू और चमगादड़, देकर संदेश कोटर से झाँक रहे।।
सुख–चैन और नींद को छीनने, गली–गली घूमते हैं पापी।
बेटियाँ सुरक्षित नहीं है भारत में, यह कैसी है आजादी?
कोई दहेज के लिए प्रताड़ित होकर, जल रही हैं आग में?
जुल्म और सितम को सहना, लिखा है नारियों के भाग में।।
कम उम्र में ही कर दी जाती है जोर–जबरदस्ती से शादी।
बेटियाँ सुरक्षित नहीं है भारत में, यह कैसी है आजादी?
शराबी पति शेर बन दहाड़ रहे, पत्नी को समझकर बकरी।
दुःख के पलड़े में झूल रही जिंदगी, नरक की तौल–तखरी।।
व्याकुल मन की चीख–पुकार अब खोल रही द्वार बर्बादी।
बेटियाँ सुरक्षित नहीं है भारत में, यह कैसी है आजादी?
प्राचीन काल से ही गौरव नारी हुई थी शोषण का शिकार।
अब दुर्गा बन कलयुगी दानव महिषासुर का करो संहार।।
पढ़–लिख कर आत्मरक्षा के लिए बननी होगी फौलादी।
जिस दिन बेटियाँ सुरक्षित रहेंगी, उसी दिन मिलेगी आजादी।।

अशोक कुमार यादव
मुंगेली,
छत्तीसगढ़

आओ फहराएं तिरंगा फर–फर

पन्द्रह अगस्त अमर रहें ।
आओ फहराएं तिरंगा फर–फर,
आन बान और शान है तिरंगा,
सदा इनका सम्मान करें ।।

आजादी की अमृत महोत्सव ,
घर–घर तिरंगा,हर घर तिरंगा ।
भारत मां की वीर सपूतों को ,
सौ–सौ बार हम नमन करें ।।

सत्य ,अहिंसा,अमन, शांति का,
जिसने दिया है सुन्दर सा पैगाम ।
तहे दिल से सादर करते है प्रणाम ,
देश भक्ती की अविरल धारा को सत्कार करें ।।

शत्–शत् नमन है उन महापुरुषों को ,
जिन्होनें अपने प्राणों की दी है बलिदानी ।
वंदे मातरम ,जय हिंद ,जय भारत,
पन्द्रह अगस्त अमर रहें हम सभी गुनगान करें।।

आसमान से ऊँचा हमारा जहान है,
सारे जहां से अच्छा हमारा हिंदुस्तान है ।
भारत माता की जय तिरंगे झंडे की जय ,
मिल जुलकर हम सब गीत गान करें ।।

डोमेन्द्र नेताम (डोमू)
मुण्डाटोला डौण्डीलोहारा
जिला–बालोद (छ.ग.)

"शुक्रिया दोस्त "

मेरी जिंदगी में आने के लिये शुक्रिया दोस्त ,
वीरानी सी मेरी जिंदगी में कूछ
गुल खिलाने के लिये शुक्रिया दोस्त
ठहरी एक नदी सी थी मैं,
मूझे लहरों से मिलाने के लिये शुक्रिया दोस्त,
यूँ तो हजार पन्नों से कई रिश्तें है,जीवन की इस किताब में,
मेरी किताब को दर्द की नमी,दुख की धूल से
अपनी दोस्ती के कवर से बचाने के लिये शुक्रिया दोस्त,
जिन लम्हों में साथ छोड़ दिया था,
हर रिश्तें ने उन तन्हाई के
पलों में अपनी मौजूदगी को बना के
घड़ी की सुईया मेरे वक्त को
काट ने के लिये शुक्रिया दोस्त,
किस्मत के चौहराये पे नसीब की
ठोकर से मैं गिरी कई मर्तबा,
पर गिरते हुऐ मेरे हाथ को
थाम ने के लिये शुक्रिया दोस्त,
वक्त की मार के बादल जब बरसें मुझ पे तो,
अपनी यारी के छाते से मुझे भीगने से
बचाने के लिये शुक्रिया दोस्त,
जब छोड़ दिया था परछाई ने भी साथ मेरा,
तब मेरी रूह बन जाने के लिये शुक्रिया दोस्त,
देने के लिये कूछ नहीं मेरे पास
सिर्फ इन अल्फाजो के
सिवा मेरे दोस्त "शुक्रिया दोस्त "

नीतू यादव
जयपुर, राजस्थान।

सवालों का अनुबंध, सरकार बनाम विपक्ष ..!

तो चलिए आज बात करते है कुछ सवालों के जो बतौर कलमकार मैने पक्ष और विपक्ष दोनों से पूछा है । जनता के तरफ से ये सवाल होंगे जिनके जवाब भाजपा और कांग्रेस दोनो को सदन में देना चाहिए और यदि नही दे सकते तो फिर चुनावों के दौरान उनके प्रत्याशियों को देना होगा । प्रश्न करना पत्रकारों और जनता का अधिकार है किंतु यह अधिकार उन तमाम यूट्यूबर से छीन लेना चाहिए जो प्रश्न पूछने के नाम पर केवल भाजपा या कांग्रेस को टारगेट करते है । आपको पत्रकार या सोशल मीडिया इंफ्लूएंसर कहलाने का अधिकार भी नही मिलेगा । अजीत अंजुम, रवीश कुमार, साक्षी जोशी जैसों को पत्रकार कहना पत्रकारिता का अपमान है किंतु उधर अमीश देवगन , रुबिका लियाकत और सुमित को पत्रकार कहना भी जायज नहीं लगता । मुद्दे उठाइए तीखे प्रश्न कीजिए किंतु केवल मोदी या राहुल को टारगेट मत कीजिए । आते है कांग्रेस और भाजपा के प्रवक्ताओं और सोशल मीडिया प्रभारियों पर जिन्हे इन सवालों के जवाब देना चाहिए जैसे अनिल अंबानी की पेपर कंपनी – रिलायंस डिफेंस लिमिटेड के लिए 21, 000 करोड़ रुपये के ऑफसेट कॉन्ट्रैक्ट हासिल करने के लिए उठाए गए गलत कदमों के बारे में क्या? तो नेशनल हेराल्ड मामले में सोनिया गांधी और राहुल गांधी की चुप्पी क्यों .? भारतीय रक्षा क्षेत्र को भी भ्रष्टाचार का अड्डा बनाने के बारे में क्या ख्याल है? 700 करोड़ रुपये के राफेल विमान को 1660 करोड़ रुपये में खरीदने का क्या हुआ? तो बॉफोर्स घोटालों में कांग्रेस ने कितना कमाया इसका आकड़ा कब ..? भाजपा में लड़ाकू विमानों की संख्या 126 के बजाय 36 तक कम करने के बारे में क्या ख्याल है? लड़ाकू विमान खरीदने की जगह वाड्रा ने जमीन क्यों खरीदी यूपीए सरकार के समय ?

सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के बारे में क्या, जिसे रोक दिया गया था? तो चीन से क्या गुफ्तगू किया गया राहुल और सोनिया के द्वारा 2014 बीजिंग में . ? अंबानी के लिए रक्षा खरीद प्रक्रिया में संशोधन? प्रियंका गांधी ने पेंटिंग कई करोड़ में क्यों खरीदे ? रिलायंस डिफेंस सिस्टम्स और फ्रांसीसी कंपनी थेल्स के बीच एक संयुक्त उद्यम, को अनुबंध देने के बारे में क्या, जिसके पास रडार या विमान सहायक उपकरण बनाने का कोई पूर्व अनुभव नहीं है । तो यूपीए सरकार में किए गए सभी सौदे वैध कैसे ? राफेल सौदे की जांच से ठीक पहले सीबीआई निदेशक आलोक वर्मा को हटाने के बारे में क्या कहना है? तो बंगाल राजस्थान हिंसा पर चुप्पी क्यों है विपक्ष में .? राफेल सौदे पर चर्चा के लिए गठित समिति के समक्ष अपनी असहमति दर्ज कराने वाले अधिकारियों की जबरन छुट्टी के बारे में क्या? डोकलॉम विवाद पर चर्चा क्यों नही होती ? उस सीएजी रिपोर्ट के बारे में क्या जो समझौते के कई विवरणों के साथ तैयार की गई है? उस रिपोर्ट पर चर्चा क्यों जिसमे बुरहान वानी और तिस्ता सीतलवाड़ जैसे अपराधी डिफेंड होते है ? राफेल सौदे की जांच के लिए संयुक्त संसदीय समिति गठित करने में सरकार की अनिच्छा के बारे में क्या कहना है? राफेल सौदे की सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में सीबीआई जांच की मांग वाली याचिका को खारिज करने में मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई की कार्रवाई के बारे में क्या कहेंगे? यदि आपको "फ्लाइंग किस" पसंद नहीं है, तो चलिए महंगाई के बारे में बात करते हैं, स्मृति जुबिन ईरानी जी और राहुल गांधी जी यदि आपको मणिपुर की हिंसा पसंद नही तो बंगाल और राजस्थान की हिंसा पर बात करते है .? जवाब तो दोनो पक्षों से लेना है अभी या चुनाव के समय पर जज साहब निष्पक्ष नहीं रहे लेकिन संविधान निष्पक्ष रहेगा ।**पंकज कुमार मिश्रा**

नमन करें देश के बलिदानियों को

देश के अलग अलग प्रान्तों में जन्मे वीरों ने अपनी अपनी भूमिका निभाई थी।कई वीरों के नाम है।उन नामों में एक जानकारी के मुताबिक ऐसे नाम भी है जो बहुत कम पढ़ने में आए है।बहुत से नामों मे से जो मालूम है वो इस प्रकार से है। मालवा –निमाड़ क्षेत्र के वीरों की अमर गाथा जिन्होंने अग्रेजों से मुकाबला कर स्वाधीनता दिलाई थीएक जानकारी के मुताबिक उन शहीदों में अमझेरा के राणा बख्तावर सिहंजी ,इंदौर के भगीरथ सिलावट और सआदत खाँ,बड़वानी रियासत के पंचमोहली गांव के भीमा नायकजी और उनके साथी मोवसियाजी,रेवलियाजी नायक एवं बड़वानी के ही खाज्या नायक जी जो की सेंधवा घाट के नायक रहेद्यबड़वानी के सीतारामजी कंवर और रघुनाथसिंह जी क्रांतिकारियों में धार की रानी जीजाबाई,रानी कभी भीमराव भोंसलें तथा धार राज्य के दिवान रामचंद्र बापू ,गुलाबराय कामदार ,सलकूराम पटवारी भोपावर,मोहनलाल कामदार टांडा ,कुंवर भावै सिंह मुसाहब,चिमनलाल वकील,मालवा निमाड़ के आदि अनेक क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों और उन्हें देश से बाहर निकालने में अपनी भूमिका निभाई थीद्यइनके अलावा मालवा निमाड़ के राघोगढ़,महिदपुर,ग्वालियर आदि क्षेत्रों के क्रांतिकारी जुड़े।क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़े शहीदों और रण –बाँकुरों के बलिदान का स्मरण करना आवश्यक भी है और हमारा कर्तव्य भी है पुरुषों में देशभक्त ,साहसी, वीर मातृभूमि के लिए शहीद हुए उन्हें नमन।वही महिलाओं में भारत की महान वीरांगनाएँ –वीरांगना वीरमती ,महारानी लक्ष्मीबाई , महारानी अहिल्याबाई,रानी दुर्गावती ,राजमाता जीजाबाई,महारानी कर्मवती ,रानी चेन्नमा , रानी सारंधा ,नारी रत्न येसुबाई ,वीरांगना वेलु नाचियार ,वीरांगना भीमा बाई ,बेगम हजरत महल , क्रांतिकारिणी कामा ,रानी गिंडालो ,पार्वती देवी , महाराणा प्रताप की जननी ,दुर्ग रक्षिका राजकुमारी , स्वतंत्रता सेनानी शहीद प्रीति लता ,कल्पना दत्ता, उदा देवी,सुमिति चौधरी, शांति घोष,बीना दास,दुर्गा भाभी,लक्ष्मी सहगल आदि वीरांगनाओं ने देश का मस्तक कीर्ति,गौरव और यश से देशभक्ति निभाकर वीरता से दुश्मनों को पराजित किया। इनकी पुनीत प्रेरणादायी भावनाओं और गुणों को हम सब याद करते हुए नमन करते है। स्वाधीनता के लिए शहीदों का श्रद्धा से स्मरण कर अपने मन मे देशभक्ति से युक्त संस्कारों की ऊर्जा भरकर इतिहास पर गर्व करें। साथ ही खुद पर गर्व करें की हमने भारत की भूमि पर जन्म लिया हैद्यजहाँ की माटी का महत्व व देश भक्ति क्या होती है का पाठ पढ़ाया जाता है देश के अमर शहीदों और रण –बाँकुरों को नमन।

भारतीय शिक्षा प्रणाली को आधुनिक बनाने और पुनर्जीवित करने का प्रयास एक साहसिक प्रयास

पिछले तीन वर्षों के दौरान, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति सभी स्तरों पर शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण बदलाव लाने का प्रयास करती है। उपरोक्त पहलों में स्कूलों के भीतर नवाचार और उद्यमिता के लिए अनुकूल शैक्षिक वातावरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक राष्ट्रीय नीतिका कार्यान्वयन शामिल है। इसका प्राथमिक उद्देश्य एक ऐसी संस्कृति विकसित करना है जो छात्रों में उनकी उम्र की परवाह किये बिना रचनात्मकता, विचार, समस्या समाधान और उद्यमशीलता कौशल को प्रोत्साहित करती है। इसके अतिरिक्त स्कूलों में 75 भारतीय खेलोंकी शुरुआत, भारतकी विविध सांस्कृतिक विरासत की खोज को सुविधाजनक बनाने के लिए 750 स्कूलों में कलाशाला पहल की शुरुआत और स्कूलों के लिए नये राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचे के लिए सिफारिशें एकत्र करने के लिए एक सार्वजनिक परामर्श सर्वेक्षण का उपयोग भी उल्लेखनीय प्रयास हैं। हालमें शुरू की गयी पहलों में 200 वर्चुअल प्रयोगशालाएं और विद्या अमृत पोर्टल शामिल हैं। मंत्रालयने स्कूली शिक्षाके लिए एनसीएफ 2023 के लिए 23 भाषाओं में उपल. ब्ध एक सार्वजनिक परामर्श सर्वेक्षण शुरू करने की भी घ ोषणा की है एवं अप्रैलमें ही स्कूल शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का ड्राफ्ट भी सार्वजनिक पटलपर आया है।

स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग समग्र शिक्षा अभियान जैसी मौजूदा पहलों को बढ़ाने और आधुनिक बनाने पर सक्रिय रूप से काम कर रहा है, ताकि उन्हें एनईपी 2020 की सिफारिशों के साथ जोड़ा जा सके, जिससे शिक्षा में सकारात्मक बदलाव लायगा। शिक्षक विकासके लिए निष्ठा कार्यक्रम सीखनेके परिणामों को बढ़ाने के लिए शुरू किया गया है, जो एक महान राष्ट्रीय मिशन है! डा. के.कस्तूरी रंगन के प्रेरक नेतृत्व में स्कूली शि क्षा और साक्षरता विभाग सकारात्मक बदलाव लाने और राज्य पाठ्यचर्या रूपरेखा बनानेके लिए राज्योंके साथ सक्रिय रूपसे सहयोग कर रहा है। ये रूपरेखा शिक्षाके लिए एक उज्जवल भविष्य सुनिश्चित करते हुए एक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा के विकासका मार्ग प्रशस्त करेंगे। दूसरी ओर उच्च शिक्षाकी स्थिति धीरे–धीरे काफी बदल गयी है। उदाहरणर्थ–विश्वविद्यालय अनुदान आयोगकी मान्यता प्राप्त डिग्रीकी सूचीमें वर्तमानमें चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम शामिल नहीं है, जो एक व्यापक, बहुविषयक या उदार शिक्षा प्रदान करनेके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 200 के स्तंभों में से एक है। अपने संवैधानिक जनादेशके अनुसार उच्च शिक्षामें मानकोंके नियंत्रण और रखरखाव के लिए एक नये ढांचेका निर्माण उच्च शिक्षा विभागके महत्वपूर्ण कर्तव्योंमेंसे एक है, जैसा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के तहत प्रत्याशित है राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा दी गयी स्वतंत्रताको प्राप्त करनेके लिए, कई अन्य कानूनोंको भी संघ ीय और राज्य स्तरोंपर संशोधित करनेकी आवश्यकता होगी। इनमें कई प्रकारके विश्वविद्यालयों को नियंत्रित करनेवाले कानूनके साथ वे कानून भी शामिल हैं जो वास्तुकला परिषद, भारतीय फार्मेसी परिषद और अन्य जैसे कई पेशेवर निकायों के कार्योंको निर्दिष्ट करते हैं। चूंकि यह बहु–विषयक उच्च शिक्षा संस्थानोंको प्रस्तावित नये नियामक ढांचेसे पूरी तरहसे लाभान्वित होनेसे रोकता है, इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मसौदे एनईपी 2019 के दृष्टिकोणसे अलग होने और प्रस्तावित नये नियामक ढांचेसे चिकित्सा और कानूनी शिक्षाको बाहर करनेके निर्णयपर भविष्यमें पुनर्विचार करने की आवश्यकता हो सकती है। स्थानीय भाषामें सीखना हमेशा भारतीय शिक्षा प्रणालीके लिए एक बाधा रहा है, क्योंकि हमेशा संपन्न और

वंचितके बीच एक विभाजन होता है। इस मुद्देको हल करनेके लिए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने क्षेत्रीय भाषाओं में कक्षाओं–व्याख्यानों के संचालन को प्राथमिकता दी है। शिक्षा मंत्रालय ने राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचे के पचवें संशोधित संस्करणके लिए मसौदा सुझावोंकी घोषणा की है, जिसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्य के आलोक में तैयार किया गया था। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम फ्रेमवर्क 2023 के मसौदे में प्रस्तावित संशोधनों का भारत में कक्षा एक से कक्षा 12 तक के बच्चों के सीखने के तरीके पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम फ्रेमवर्क–2023 एक ऐसा विषय है जिसने शिक्षाविदों के बीच आकर्षण हासिल किया है। सभी महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयोंको धीरे–धीरे स्वायत्तता प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की सिफारिश का एक प्रमुख घटक सभी उच्च शिक्षा संस्थानों को कम से कम हर पांच साल में एक बार प्रमाणित करने की मान्यता देने वाले ढांचे की क्षमता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सिफारिशों के जवाब में भारत में उच्च शिक्षा का अंतरराष्ट्रीयकरण करने की पहल को लागू करना शुरू कर दिया है। विदेशी विश्वविद्यालय अब भारत में परिसर स्थापित कर सकेंगे। भारत में अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के निर्माण और संचालन के लिए, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने भारत में अंतरराष्ट्रीय उच्च शैक्षिक विश्वविद्यालयों के परिसरों का निर्माण और संचालन–2023 शीर्षक से एक ड्राफ्ट प्रकाशित किया है जिसके परिणामस्वरूप, भारत में उच्च शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन प्रतिविम्बित होगा, साथ ही उच्च शिक्षा और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में एक क्रांति आएगी। राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद के तत्व. ावधान में शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय व्यावसायिक मानकों के ड्राफ्टपर देश भर के विश्वविद्यालयों में ओपन हाउस चर्चा आयोजित की गई है, जिसमें शिक्षाविदों, विषय विशेषज्ञों, शिक्षाविदों, नीति–निर्माताओं, स्कूलके प्राचार्यों निजी स्कूल प्रबंधन के प्रतिनिधियों, सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों द्वारा सक्रिय भागीदारी और विचार–विमर्श किया गया है। इसमें स्कूली शिक्षकों के 360 डिग्री मूल्यांकन और उनके कार्यकाल या वरिष्ठताके बजाय उनके प्रदर्शनके आधार पर शिक्षकों की पदोन्नति की आवश्यकता शामिल है। शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक अनुभव की एक श्रृंखला के आधार पर शिक्षकों की तैयारी, अभ्यास और प्रदर्शन पर केंद्रित हैं। इसमें एनसीटीई द्वारा संचालित किए जाने वाले प्रत्येक विद्यालय में शिक्षकों के वार्षिक मूल्यांकन का भी उल्लेख है। यह अनुशंसा करता है कि शिक्षक एक वर्ष में निरंतर कौशल उन्नयन और 50 घंटे के अनिवार्य व्यावसायिक कौशल उन्नयन से गुजरें, एनपीएसटी मसौदा नीति के अनुसार एक शिक्षक के करियर को उनकी वरिष्ठता के अनुसार चार चरणों में विभाजित किया जाएगा–प्रगामी शिक्षक, प्रवीण शि क्षक, कुशल शिक्षक और प्रमुख शिक्षक। एक प्रवेश स्तर का शिक्षक, ड्राफ्ट के अनुसार शिक्षण ज्ञान के बुनियादी स्तरों को प्रदर्शित करने और अगले स्तर तक पहुंचने के लिए अपने करियर में बढ़ने का अवसर है लेकिन अभी तक शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा का कोई भी ड्राफ्ट अभी तक निकलकर नहीं आया है हालांकि चार वर्षीय एकीकृत बीएड में प्रवेश के लिए राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी ने आवेदन आमंत्रित किए हैं मेरे लिए समझसे परे कि बिना पाठ्यक्रम निर्धारित किया बीएड में प्रवेश कहीं जल्दबाजी तो नहीं, प्राथमिक और उच्च शिक्षा के परिवर्तन के माध्यम से, यह आजीवन सीखने और कौशल विकास के अवसर प्रदान करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 परिणाम–आधारित शिक्षा को बढ़ाने के लिए शैक्षणिक नवाचार और अनुसंधान पर भी जोर देती है। प्रारंभिक शिक्षा पूरी तरह से विषय–वस्तु आधारित थी, जिसमें व्यावहारिक घटकों पर न्यूनतम जोर दिया गया था। एनईपी द्वारा विषय–वस्तु आधारित से परिणाम आधारित शिक्षा में परिवर्तन संभव बनाया जायगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० की व्यवहार्यता और दक्षता में सुधार करनेके लिए विभिन्न शिक्षण शास्त्रों में शिक्षण प्रथाओं को शामिल किया जाएगा। भारतीय शिक्षा प्रणाली को आधुनिक बनाने और पुनर्जीवित करनेका प्रयास एक साहसिक प्रयास है। शिक्षाकी गुणवत्ता बढ़ाने और रोजगारको बढ़ावा देनेके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० उत्साहजनक रूपसे आगे बढ़ रही है।

यमुना के साथ मिलकर त्रिवेणी संगम में गुथी सरस्वती नदी

भारत में नदियों की संख्या कुल मिलाकर 200 है, इनमें से गंगा यमुना कृष्णा कावेरी नर्मदा और गोदावरी जैसी प्रमुख नदियां हैं। लेकिन यहां पर हमारे इस नदी के बारे में चर्चा करना चाहते हैं उसका नाम तो आपने सुना होगा लेकिन इसे बहते हुए नहीं देखा होगा। वह नदी जो कभी धरती पर बहती थी उसका नाम है सरस्वती। हिंदू धर्म ग्रंथों के अनुसार सरस्वती नदी का चित्र ऋग्वेद में मिलता है। ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि यह नदी हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले के पर्वतीय क्षेत्र से निकलकर अंबाला और कुरुक्षेत्र कैथल से होती हुई पटियाला के सृष्टि में मिल जाती थी पौराणिक कथाएं बताती हैं कि इस नदी का महत्व बहुत था लेकिन यह नदी आज विलुप्त हो गई है। जनश्रुति है कि हजारों साल पहले यह नदी बहती थी लेकिन किसी सरकारी या सूट पर विलुप्त हुई है। पुराणों में एक नदी का वर्णन रामायण महाभारत में भी मिलता है कहा जाता है कि प्रयाग में गंगा यमुना और सरस्वती का संगम है और यह भी जल गया के अंदर सकती है प्रयाग के संगम में दिखती है।

प्रिय पाठकों,

इस अंक में प्रकाशित सभी अग्रलेख, कथा–लघु कथा, कविता, व्यंग्य, विचार विमर्श लेखकों एवं विचारकों की अपनी कल्पना प्रसूति हैं। त्रुटियां मानवीय स्वभाव का अंग हैं जिनकी ओर ध्यान आकृष्ट करना एक जागरूक पाठक की विशेषता होती है।

अतः आप सभी सुधी विज्ञजनों, से ऐसी अपेक्षा की जाती है कि आप अपने पत्रों के माध्यम से इस अंक में प्रकाशित त्रुटियों की ओर ध्यान आकृष्ट भी समय–समय पर कराते रहें ताकि उन त्रुटियों की पुनरावृत्ति से बचा जा सके।

विवाद की स्थिति में न्यायालय, गोरखपुर का निर्णय अंतिम व मान्य होगा।

–व्यवस्थापक

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक पंकजधर द्विवेदी द्वारा जनप्रकाशन प्रेस, निकट रीड्स साहब का धर्मशाला से मुद्रित एवं 45 बादशाहबाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर से प्रकाशित। सम्पादक–पंकज धर द्विवेदी सम्पर्क सूत्र– e-mail- ghoonghatkibagawat37@gmail.com